

फरवरी 2017

# दादावाणी

कीमत ₹ 10



जो चल रहा है,  
उसे क्या चलाना?

'जन्म पहले चलता था और मरने के बाद चलेगा,  
रुके नहीं कभी भी व्यवहार रे, सापेक्ष संसार रे...'

संपादक : डिम्पल महेता

वर्ष : 12 अंक : 4

अखंड क्रमांक : 136

फरवरी 2017

संपर्क सूत्र :

त्रिमंदिर, सीमंधरसिटी,

अहमदाबाद-कलोल हाइ-वे,

पो.ओ.: अडालज,

जि.: गांधीनगर-382421.

फोन : (079) 39830100

email: dadavani@dadabhagwan.org

www.dadabhagwan.org

दादावाणी संबंधी शिकायत के लिए:

8155007500

**Printed & Published by**

**Dimple Mehta on behalf of  
Mahaveh Foundation**

5, Mamtapark Society,  
Bh. Navgujarat College,  
Usmanpura, Ahmedabad-14.

**Owned by**

**Mahaveh Foundation**

5, Mamtapark Society,  
Bh. Navgujarat College,  
Usmanpura, Ahmedabad-14.

**Printed at**

**Amba Offset**

Basement, Parshvanath  
Chambers, Nr.RBI,  
Usmanpura, Ahmedabad-14.

**Published at**

**Mahaveh Foundation**

5, Mamtapark Society,  
Bh. Navgujarat College,  
Usmanpura, Ahmedabad-14.

Total 32 pages including cover

**सबस्क्रिप्शन ( सदस्यता शुल्क )**

**१५ साल**

भारत : ७५० रुपये

यू.एस.ए. : १५० डॉलर

यू.के. : १०० पाउन्ड

**वार्षिक**

भारत : १०० रुपये

यू.एस.ए. : १५ डॉलर

यू.के. : १० पाउन्ड

भारत में D.D./M.O.

‘महाविदेह फाउन्डेशन’ के नाम से

संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

# दादावाणी

**यदि जीते जी मर जाएँगे तो फिर मरना नहीं पड़ेगा**

**संपादकीय**

ज्ञानीपुरुष से ज्ञान प्राप्त होने के बाद उनकी कृपा से हमारा मूल सूक्ष्मतरंग अहंकार विलय हो जाता है। उसके बाद जो सूक्ष्मतरंग, सूक्ष्म, स्थूल अहंकार डिस्चार्ज स्वरूप से हैं, उनका *निकाल* करना बाकी रहता है। कर्म बाँधने वाला अहंकार खत्म हो जाता है और कर्म भुगतने वाला अहंकार बाकी रहता है, वह निकाली अहंकार, निर्जिव अहंकार है।

ये डिस्चार्ज बुद्धि-अहंकार यों हैं तो निर्जीव, लेकिन फिर भी दैनिक व्यवहार में उनके परिणाम स्वरूप कभी-कभी कषाय के परिणामों का उदय होता है। तब जागृति नहीं रहने की वजह से असर हो जाता है, वास्तव में तब यदि आज्ञा का उपयोग हो, तो असर से मुक्त रहा जा सकता है। लेकिन जहाँ असर हो जाता है, उन संयोगों में ‘जीते जी मर जाना’, इस टेका ज्ञान का उपयोग करके असर से मुक्त रह सकते हैं।

‘जीते जी मर जाने’ का अर्थ दादा सरल भाषा में बताते हैं, ‘दखल व चिंता रहित जीवन।’ रिलेटिव को डिवैल्यू करते-करते रियल का लक्ष (जागृति) बढ़ता जाता है। पसंद-नापसंद संयोगों में कोई फर्क नहीं, निर्भयता, मौन, तप, नाटक पूरा करना, हुआ सो न्याय, व्यवस्थित शक्ति वाली आज्ञा, अहंकार की लगाम छोड़ दो, इन सभी सिद्धांतों के मोतियों से जीते जी मर जाना बहुत सरल हो सकता है।

प्रस्तुत संकलन में दादाश्री कहते हैं कि ज्ञानी संसार में मृत ही रहते हैं और आत्मा में ही जीते हैं! हमें जीते जी मर जाने के लिए विविध प्रकार से समझाते हुए कहते हैं, कि अब चंदूभाई को उनका काम नहीं निकालना है, लेकिन हमें अपना काम निकाल लेना है। हमें अपने पक्ष में रहकर, डिस्चार्ज अहंकार का *निकाल* करना है।

मोक्ष जाने वाले महात्माओं को जैसे-जैसे रियल-रिलेटिव की भेद रेखा समझ में आती जाएगी वैसे-वैसे रिलेटिव डिवैल्यू होता जाएगा और तब, ‘जीते जी मर जाना’, नामक चाबी का उपयोग करना सरल हो जाएगा। पाँच आज्ञा की आराधना करने से संसार व्यवहार के पसंद-नापसंद संयोगों में असर मुक्त रहकर जागृतिपूर्वक मोक्ष का पुरुषार्थ कर सकेंगे।

यहाँ पर इस अंक में जो ‘मर जाना’ (मृत) शब्द का बार-बार उपयोग हुआ है, उसका अर्थ है ‘अहंकार रहित दशा’ दादाश्री हमें मरकर जीने का कह रहे हैं उसका अर्थ यह है कि खुद के बुद्धि-अहंकार का अस्तित्व खत्म करके ज्ञानपूर्वक फाइलों का *निकाल* करना।

वास्तव में आत्मा का ज्ञान प्राप्त होने के बाद खुद तो शुद्धात्मा है और फाइल न एक निश्चेतन-चेतन मुर्दा है। इस मुर्दे को होने वाले असर को वह अपने सिर पर ले लेता है। इससे ज्ञान-दर्शन पर आवरण आ जाता है। वहाँ पर यदि वह खुद जागृत रहे, ज्ञाता-दृष्टा रहे, तो जागृति बढ़ेगी और वैसे-वैसे आत्म अनुभव के अंश बढ़ते जाएँगे।

**जय सच्चिदानंद**

पाठकों से...

‘दादावाणी’ सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलतः गुजराती ‘दादावाणी’ का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेजी शब्द का अर्थ हैं अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश हैं। यहाँ पर ‘आत्मा’ शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। जहाँ पर भी ‘चंदूभाई’ नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर पाठक खुद को समझें। ‘दादावाणी’ के इस अंक में अगर आप कोई बात न समझ पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। अनुवाद में कोई कमी नज़र आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें, ताकि भविष्य में सुधार किया जा सके। ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी हैं।

**यदि जीते जी मर जाएँगे तो फिर मरना नहीं पड़ेगा**

**ऐसे रहना जैसे कुछ भी नहीं जानते**

**प्रश्नकर्ता :** इतने वर्ष हो गए हैं ज्ञान लिए हुए, लेकिन अभी भी क्रोध आ जाता है, तो इस क्रोध को कैसे मारें?

**दादाश्री :** क्रोध को मारने के बजाय यदि हम ही मर जाएँ तो क्या बुरा है? श्रीमद् राजचंद्र ने कहा है कि ‘जीते जी मर जाएँगे’ तो फिर से नहीं मरना पड़ेगा।

**प्रश्नकर्ता :** जीते जी मरे हुए जैसी स्थिति हो जाए तो वह बहुत अच्छा कहा जाएगा।

**दादाश्री :** लेकिन ऐसा होना चाहिए न! जीते जी मृत जैसा! अगर कोई मृत की तरह जीए, तब यदि बेटा पैसे उड़ा रहा हो तो वह मरा हुआ व्यक्ति क्या करेगा? देखता रहेगा! जीवन तो ऐसा होना चाहिए।

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन अगर बच्चे गलत करें तो उन्हें सुधारने के लिए कहना तो चाहिए न?

**दादाश्री :** सब ‘व्यवस्थित’ चलाता है, कुछ भी कहने जैसा नहीं है। ‘खुद का’ धर्म कर लेने जैसा है। पहले तो ऐसा समझते थे कि ‘हम चलाते हैं, इसलिए हमें बुझाना पड़ेगा।’ अब तो आपको नहीं चलाना है न! अब तो यह भी लट्टू और वह भी लट्टू! छोड़ो न पीड़ा यहीं से। प्याला फूटे, कढ़ी दुल जाए, पत्नी बच्चे को

डॉट रही हो, फिर भी आप यों घूमकर आराम से बैठ जाना। आप देखोगे तभी वे कहेंगी न कि ‘आप देख रहे थे फिर भी क्यों नहीं बोले?’ न हो तो हाथ में माला लेकर फेरने लगना, तब वह कहेगी कि ‘ये तो माला में है। छोड़ो न!’ आपको क्या लेना-देना? श्मशान में नहीं जाना हो तो किच-किच करो! यानी कि कुछ बोलने जैसा नहीं है। यह तो गायें-भैंसें भी अपने बच्चों के साथ उनके तरीके से भों-भों करते हैं, अधिक नहीं कहते! जबकि ये मनुष्य तो ठेठ तक कुछ न कुछ कहते ही रहते हैं। जो बोले, वह मूर्ख कहलाता है। पूरे घर को खत्म कर देता है। उसका कब अंत आएगा? अनंत जन्मों से संसार में भटके हैं। न किसी का भला किया, न खुद का भला किया। जो इंसान खुद का भला करता है वही दूसरों का भला कर सकता है।

**‘हुआ सो करेक्ट’ कहकर लाओ हल**

भगवान ने कहा, ‘तू सुधर तो तेरी हाज़िरी से सब सुधरेगा।’ यह सब तो अनिवार्य है। आपको तो कहना चाहिए, ‘जो हुआ वही करेक्ट।’ ‘जो भुगते उसी की भूल है। हुआ वही करेक्ट,’ ऐसा कहकर चलोगे तो हल आएगा।

घर में जो हो जाए उसे ‘करेक्ट’ कहना, ‘इन्करेक्ट’ कहोगे तो कोई फायदा नहीं होगा। गलत देखने वाले को संताप होगा। इकलौता बेटा

मर गया तो 'करेक्ट' है, ऐसा किसी से नहीं कह सकते। वहाँ तो ऐसा ही कहना पड़ेगा कि, 'बहुत गलत हो गया'। दिखावा करना पड़ेगा। ड्रामेटिक करना पड़ेगा। बाकी, अंदर तो 'करेक्ट' ही है, ऐसा करके चलना। प्याला जब तक हाथ में है, तभी तक प्याला है! फिर गिर पड़े और फूट जाए तो 'करेक्ट है', ऐसा कहना चाहिए। बेटी से कहना कि 'सँभालकर धीरे से लेना' लेकिन अंदर ऐसे कहना कि 'करेक्ट है'। यदि क्रोध भरी वाणी नहीं निकले तब फिर सामने वाले को नहीं लगेगी। मुँह पर बोल देने को ही क्रोध नहीं कहते, अंदर-अंदर कुढ़ना भी क्रोध कहलाता है। सहन करना, वह तो डबल क्रोध है।

**इस काल में किसी से कुछ कहने जैसा नहीं है**

इस काल में कम बोलना, उसके जैसा कुछ भी नहीं है। इस काल में तो बोल ऐसे निकलते हैं कि पत्थर जैसे लगे, और हर एक का ऐसा ही होता है। इसीलिए बोलना कम कर देना अच्छा है। किसी से कुछ भी कहने जैसा नहीं है। कहने से अधिक बिगड़ता है। अगर उसे कहें कि गाड़ी पर जल्दी जा, तो वह देर से जाता है। और कुछ न कहें तो टाइम पर जाता है। ऐसा है कि हम नहीं होंगे, तो भी सब चलेगा। यह तो खुद का झूठा अहंकार है। जिस दिन से आप बच्चों के साथ किच-किच करना बंद करोगे, उस दिन से बच्चे सुधरने लगेंगे। आपके बोल अच्छे नहीं निकलते इसीलिए सामने वाला चिढ़ता है। आपके बोल वह स्वीकार नहीं करता, बल्कि वे बोल वापस आते हैं। आप तो बच्चे को खाने-पीने का बनाकर दो और अपना फर्ज पूरा करो, अन्य कुछ कहने जैसा नहीं है। कहने से फायदा नहीं, ऐसा आपका सार निकलता है न? बच्चे बड़े हो गए हैं, वे क्या सीढ़ियों से गिर जाएँगे? आप अपना आत्मधर्म क्यों चूकते हो? ये बच्चों के साथ का

तो रिलेटिव धर्म है। वहाँ बेकार माथापच्ची करने जैसा नहीं है। कलह करते हो, इसके बजाय मौन रहोगे तो अधिक अच्छा रहेगा। कलह से तो खुद का दिमाग बिगड़ जाता है और सामने वाले का भी बिगड़ जाता है।

**प्रश्नकर्ता :** बच्चे अपनी ज़िम्मेदारी समझकर नहीं रहते।

**दादाश्री :** ज़िम्मेदारी 'व्यवस्थित' की है, वह तो अपनी ज़िम्मेदारी समझा हुआ ही है। आपको उसे कहना नहीं आया, इसीलिए गड़बड़ होती है। सामने वाला माने, तब हमारा कहा हुआ काम का। यह तो, माँ-बाप पागल जैसा बोलते हैं, फिर बच्चे भी पागलपन ही करेंगे न!

**प्रश्नकर्ता :** बच्चे तुच्छता से बोलते हैं।

**दादाश्री :** हाँ, लेकिन वह आप किस तरह बंद करोगे? यह तो आपस में बंद हो जाए न, तो सब का अच्छा होगा।

**जीते जी मरे हुए की तरह रहकर मौन ले लो**

एक बार मन विषैला हो जाए तो फिर उसकी लिंक शुरू हो जाती है। फिर मन में उसके लिए अभिप्राय बन जाता है कि 'यह आदमी ऐसा ही है।' तब आपको मौन लेकर सामने वाले को विश्वास में लेना चाहिए। बोलते रहने से किसी का नहीं सुधरता। सुधरना तो, 'ज्ञानीपुरुष' की वाणी से सुधरता है। बच्चों के लिए तो माँ-बाप की जोखिमदारी है। आप नहीं बोलोगे, तो नहीं चलेगा? चलेगा। इसलिए भगवान ने कहा है कि जीते जी ही मरे हुए जैसे रहो। बिगड़ा हुआ सुधर सकता है। बिगड़े हुए को काटना नहीं चाहिए। बिगड़े हुए को सुधारना, वह हम से हो सकता है, आपको नहीं करना है। आपको हमारी आज्ञा के अनुसार चलना है। वह तो जो सुधरा हुआ

हो वही दूसरों को सुधार सकता है। खुद ही नहीं सुधरे हों, तो दूसरों को किस तरह सुधार सकेंगे ?

बच्चों को अगर सुधारना हो तो हमारी इस आज्ञा के अनुसार चलो। घर में छह महीने का मौन ले लो। बच्चे पूछें तभी बोलना और उसके लिए भी उन्हें कह देना कि 'मुझ से न पूछो तो अच्छा'। और बच्चों के लिए उल्टा विचार आए तो उसका तुरंत ही प्रतिक्रमण कर लेना चाहिए।

### मरकर जीएगा तो नहीं करेगा दखल

**प्रश्नकर्ता :** व्यवहार में बेटे के भूल करने पर अगर हम उसे कुछ नहीं कहेंगे तो संसार में, व्यवहार में क्या कहेंगे कि 'आपको कुछ कहना चाहिए। हमें कहना चाहिए, उसे समझाना चाहिए।' हम उसे कुछ भी नहीं कहते हैं, कुछ बोलते ही नहीं, यानी कि कुछ भी दखल नहीं करते क्योंकि ज्ञान प्राप्ति के बाद हमें इतना तो समझ में आ गया है कि जो हो रहा है वह सामने वाले के साथ एक-दूसरे के कर्म के उदय की वजह से हो रहा है। उसमें हम कुछ बदल नहीं सकते, तो फिर कुछ कहना ही क्यों चाहिए ?

**दादाश्री :** ठीक है। फिर ?

**प्रश्नकर्ता :** बस, इतना ही पूछना है कि अगर हम कुछ भी न कहें तो क्या वह ठीक है ?

**दादाश्री :** हंड्रेड परसेन्ट (सौ प्रतिशत)। और अगर कह देते हो तो पश्चाताप करो। गलत है इसलिए पश्चाताप करो। वर्ना अगर हम नहीं होते तब वह क्या करता ? उदय के अनुसार कर रहा है। उसका उदय है इसलिए ऐसा कर रहा है।

यदि संसार के लोग कुछ भी नहीं कहेंगे तो वह भी गलत है। क्योंकि उन्हें तो पता ही

नहीं चलेगा कि यह भूल है। उनका कहा कुछ फलता नहीं है लेकिन लोग इसे उपदेश मानते हैं।

**प्रश्नकर्ता :** हाँ, लेकिन इसी में गड़बड़ हो जाती है। कुछ भी होने पर ऐसा ही कहते हैं कि 'तुम्हें कुछ तो कहना चाहिए न! व्यवहार की खातिर तो कहना चाहिए।'

**दादाश्री :** वे तो कहेंगे और हमें भी कहना चाहिए कि 'हाँ, वह ठीक है, सही बात है।' पर यों कहना या न कहना क्या अपने हाथ में है ? फिर भी यदि न कहा जाए तो उत्तम है।

**प्रश्नकर्ता :** हाँ! न कहा जाए तो उत्तम है।

**दादाश्री :** अरे, कहना नहीं हो फिर भी मुँह से निकल ही जाता है।

**प्रश्नकर्ता :** हाँ, वह तो ठीक है, लेकिन यदि न कहा जाए तो...

**दादाश्री :** उसके जैसा उत्तम कुछ भी नहीं। अगर हम नहीं होंगे तब वह क्या करेगा ?

**प्रश्नकर्ता :** हाँ, वही कह रहा हूँ न! मैंने तो एक बार कह दिया कि 'अगर मैं मर गया होता तो क्या होता ?'

**दादाश्री :** इसीलिए श्रीमद् राजचंद्र कहते हैं कि 'मरकर जीयो।'

**प्रश्नकर्ता :** हाँ, ठीक है। मैंने तो सभी से कह दिया है कि तुम्हें ऐसा ही समझना है कि 'मैं नहीं हूँ।'

**दादाश्री :** हाँ, जो एक बार मर जाए, उसे दोबारा नहीं मरना पड़ेगा।

'रिलेटिव' को 'रिलेटिव' ही रहने दो

बच्चों के साथ उपलक (सतही, सुपरफ्लुअस)

रहना है। असल में तो खुद का कोई है ही नहीं। इस देह के आधार पर मेरे हैं। देह के जल जाने पर कोई साथ में आता है? यह तो जो 'मेरा' कहकर छाती से चिपकाते हैं, उन्हें बहुत परेशानी है। बहुत भावुकता वाले विचार काम नहीं आते। बेटा व्यवहार से है। अगर बेटा जल जाए तो इलाज करवाना, लेकिन आपने क्या रोने की शर्त रखी है?

क्या सौतेले बच्चे को गोद में बिठाकर दूध पिलाते हैं? ना! वैसा रखना। यह कलियुग है। 'रिलेटिव' संबंध है। 'रिलेटिव' को 'रिलेटिव' रखना चाहिए, 'रियल' नहीं करना चाहिए। अगर यह संबंध रियल होता तो बच्चे से कहते कि 'तू सुधरे नहीं तब तक अलग रह।' लेकिन यह तो रिलेटिव संबंध है इसलिए एडजस्ट एवरीव्हेर।

### लटकती सलाम रखकर निभाओ ड्रामा

यह नाटक है! नाटक में बीवी-बच्चों को हमेशा के लिए खुद के बना लें तो क्या चल सकेगा? हाँ, नाटक में बोलते हैं, वैसे बोलने में परेशानी नहीं है। 'यह मेरा बड़ा बेटा, शतायु हो।' लेकिन सब उपलक्ष, सुपरफ्लुअस, नाटकीय।

यह तो सारा नाटकीय व्यवहार है, बाकी, इनमें से कोई साथ में थोड़े ही आने वाला है?

आप खुद शुद्धात्मा और यह सारा व्यवहार उपलक्ष है यानी कि 'सुपरफ्लुअस' रहना है। खुद 'होम डिपार्टमेन्ट' (आत्मा) में रहना है और 'फॉरिन' में 'सुपरफ्लुअस' रहना है। 'सुपरफ्लुअस' यानी तन्मयाकार वृत्ति नहीं, 'ड्रामेटिक'। सिर्फ यह 'ड्रामा' ही करना है। 'ड्रामा' में नुकसान हुआ तब भी हँसना और नफा हुआ तब भी हँसना। 'ड्रामा' में दिखावा भी करना पड़ता है, नुकसान हुआ हो तो उसका दिखावा करना पड़ता है। मुँह पर बोलते भी हैं कि बहुत नुकसान हुआ, लेकिन

भीतर तन्मयाकार नहीं होते। हमें 'लटकती सलाम' रखनी है। कई लोग ऐसा नहीं कहते कि भाई, मुझे तो इसके साथ 'लटकती सलाम' जैसा संबंध है! उसी तरह पूरे जगत् के साथ रहना है। जिसे पूरे जगत् के साथ 'लटकती सलाम' आ गई, वह ज्ञानी हो गया। इस देह के साथ भी 'लटकती सलाम'! हम निरंतर सभी के साथ 'लटकती सलाम' रखते हैं, फिर भी सब कहते हैं कि, 'आप हम पर बहुत अच्छा भाव रखते हैं।' मैं व्यवहार सभी करता हूँ लेकिन आत्मा में रहकर।

### जीते जी मरकर, ज्ञानी पूरा करते हैं नाटक

कोई जब भर्तृहरि का नाटक करता है, तब वह पूरी तरह से नाटक का रोल अदा करता है। चिल्लाता है, बैराग लाता है, आँखों में पानी ले आता है, रोता है, अभिनय करता है। लोग तो ऐसा ही समझते हैं कि इसे बहुत दुःख है और अगर हम उसे पूछने जाएँ कि 'क्यों, तुम्हें बहुत दुःख था?' तब वह कहेगा, 'नहीं, मैं तो लक्ष्मीचंद हूँ। यह तो मैं भर्तृहरि का अभिनय कर रहा था। अभिनय नहीं करूँगा तो मेरी तनख्वाह काट लेंगे? मैं तो लक्ष्मीचंद तरगाड़ा हूँ, मैं क्या भर्तृहरि हूँ? मैं यह जानता हूँ कि घर जाकर मुझे खिचड़ी खानी है।' अर्थात् जीवन नाटकीय होना चाहिए।

मैं अभी तक यह नाटक ही कर रहा था। मेरी पूरी लाइफ (जीवन) नाटक ही है। यह नाटकीय ही है न! अगर अभी कोई मुझे धौल लगाए न, तब भी आप मुझे ऐसा नहीं देख पाओगे कि 'मैं जीवित हूँ'। आपको ऐसा ही लगेगा जैसे मैं मर गया हूँ। क्या कोई व्यक्ति जीते जी मर सकता है?

**प्रश्नकर्ता :** अनुभव नहीं है।

**दादाश्री :** जो एक बार जीते जी मर जाए, उसे दोबारा मरना ही नहीं पड़ेगा।

## मरकर जीने से कल्याण हो जाएगा

जीवन में मरे हुए की तरह जीओगे तो निबेड़ा आ जाएगा। क्या कभी मरकर जीए हो? क्या एक दिन के लिए भी मरकर जीए हो?

**प्रश्नकर्ता :** किस प्रकार से? समझ से?

**दादाश्री :** नहीं! पूरा जगत् जीते जी मृत की तरह जी रहा है। जीते जी मृत की तरह है अपना यह जगत्। जगत् कैसा है?

**प्रश्नकर्ता :** जीते जी मरा हुआ।

**दादाश्री :** जीते जी मरा हुआ है लेकिन यदि मरकर जीने लगे तब तो कल्याण हो जाएगा। पूरा जगत् बेचारा जीते जी मरा हुआ है। 'अरे, मर गया, अरे मर गया, अरे मर गया' कहता है। मरने से पहले हजार बार बोलता होगा, 'मैं मर गया'। बोलता है या नहीं?

**प्रश्नकर्ता :** बोलता है न!

**दादाश्री :** जीते जी मृत हैं लोग। ये मरकर जी रहे हैं। लेकिन जो जीते जी मर जाए, उसकी तो बात ही अलग है। जीते जी मरने का अभ्यास करना।

## जीते जी मरना लेकिन ज्ञानी से पूछकर

जीते जी मर जाएँ तो कोई झंझट ही नहीं रहेगी न?

**प्रश्नकर्ता :** तो क्या प्रत्येक जीवात्मा को जीते जी मर जाना चाहिए?

**दादाश्री :** हाँ, यदि जीते जी मर जाए तो फिर झंझट ही नहीं रहेगी न किसी प्रकार की! लेकिन ज्ञानीपुरुष से पूछकर मरना। जो मरना नहीं जानता वह कैसे मरेगा? मरने में कौन-कौन सा भाग आता है और चेतन में कौन सा भाग आता

है वह जानना पड़ेगा, तभी मर सकेंगे। जितना जानेगा उतना मर सकेगा। बाकी सब, जितना नहीं जानता उसमें कैसे मरेगा? इसलिए ज्ञानीपुरुष को पूछकर मरना पड़ेगा।

## वास्तव में जी रहा है, उसी वजह से दखल

एक व्यक्ति को बहुत दुःख था, पत्नी की तरफ से दुःख, माँ की तरफ से दुःख, बाप की तरफ से दुःख। बेटा बड़ा हो गया था, वह भी उल्टा बोलता था, ससुराल वाले उल्टा बोलते थे, सभी उल्टा बोलते थे। वह कृपालुदेव के पास गया, कृपालुदेव ने कहा कि 'भाई, तेरा दुःख ऐसा नहीं है कि चला जाए। उसके बजाय एक रास्ता बताता हूँ। तू एक बार जीते जी मर जा और फिर आराम से जीना।' ऐसा कहा। 'फिर झंझट ही नहीं रहेगी न!' मरने के बाद हम क्या करते हैं? क्या गलत कहा?

**प्रश्नकर्ता :** जीते जी मर जा।

**दादाश्री :** हाँ, व्यर्थ ही वास्तव में जी रहा है। उसी वजह से यह दखल है न!

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन दादा, अगर जीते जी मर जाएँगे तब तो हो चुका! मुक्ति हो जाएगी।

**दादाश्री :** सभी तरफ दुःख था न, तो फिर कौन सा रास्ता बताते कृपालुदेव? एकाध व्यक्ति की तरफ से होता तो कुछ भी करके निकाल (निपटारा) कर लेते, लेकिन जहाँ पर सभी विरोधी हो गए थे वहाँ पर? इसलिए कहा, 'तू ही जीते जी मर जा न!'

**प्रश्नकर्ता :** वह तो सब से कठिन है। यदि जीते जी मर सकें तब तो सभी तरफ सुख ही सुख है।

**दादाश्री :** मरने के बाद मरना, उस तरह



से तो पूरा जगत् मरता ही है लेकिन वास्तव में तो जो जीते जी मर जाए, वही मर्द है।

**प्रश्नकर्ता :** वही असली मर्द है, वही शूरवीर है !

**दादाश्री :** हाँ, मरने के बाद तो सभी मरते हैं। जीते जी ही मर जा न!

**जीते जी मरने वाले को क्लेश होगा?**

क्या कभी घर में क्लेश होता है?

**प्रश्नकर्ता :** इच्छा नहीं होती फिर भी होता तो है ही न!

**दादाश्री :** अरे! ऐसा कहीं होता होगा? अगर होता है तो क्या हम मर गए हैं? जीवित हैं हम तो! जहाँ मुर्दा हैं वहाँ पर क्लेश होता है। कहीं क्लेश करना चाहिए? क्या कोई खुद अपना ही घर जलाता है?

**प्रश्नकर्ता :** हाँ, लेकिन अगर इंसान है तो कभी तो क्लेश होगा या नहीं? इंसान के मरने के बाद तो क्लेश रहता ही नहीं न! फिर तो उसे शांति हो जाती है।

**दादाश्री :** हाँ, लेकिन क्या उसके लिए मरना है? तो जीते जी ही मरे हुए रहो। तुम जीवित रहो और अंदर से मरे हुए रहो। यदि पत्नी दो सौ डॉलर के ग्लासवेयर तोड़ दे, तब जो जीते जी मरा हुआ रहेगा वह तो देखता ही रहेगा। वहाँ पर अगर जीते जी मृत समान रहोगे तो क्लेश नहीं होगा।

**समझ लो, आता किस आधार पर है?**

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन घर में बरतन तो खड़केंगे ही न?

**दादाश्री :** रोज़-रोज़ बरतना खड़काना कैसे

अच्छा लगेगा? यह तो समझता नहीं, इसीलिए चल जाता है। जो जागृत हो, उसे तो यदि एक मतभेद पड़ जाए तो पूरी रात नींद ही नहीं आती! इन बरतनों में (मनुष्यों) स्पंदन होते हैं, इसलिए रात को सोते-सोते भी स्पंदन फेंकता रहता है, 'ये तो ऐसे हैं, टेढ़े हैं, उल्टे हैं, नालायक हैं, निकाल देने जैसे हैं!' जबकि उन बरतनों को कोई स्पंदन है क्या? लोग समझे बिना हाँ में हाँ मिलाने हैं कि 'दो बरतन साथ में होंगे तो खड़केंगे!' घनचक्कर, हम लोग क्या बरतन हैं? तो क्या हमें खड़कना चाहिए? इन 'दादा' को किसी ने कभी भी खड़कते हुए नहीं देखा होगा! सपना भी नहीं आया होगा ऐसा! खड़कना क्यों? यह खड़कना तो अपनी खुद की जोखिमदारी पर है। खड़कना क्या किसी और की जोखिमदारी पर है? चाय जल्दी न आए, और आप टेबल को तीन बार ठोकें तो जोखिमदारी किसकी? इसके बजाय आप बुद्ध बनकर बैठे रहो। चाय मिली तो ठीक, नहीं तो देख लूँगा ऑफिस में! क्या बुरा है? चाय का भी कोई काल तो होगा न? यह जगत् नियम से बाहर तो नहीं है न? इसलिए हमने कहा है कि 'व्यवस्थित'। टाइम होने पर चाय मिलेगी, आपको ठोकना नहीं पड़ेगा। आप स्पंदन नहीं करोगे तो वह आकर रहेगी और स्पंदन खड़े करोगे तब भी आएगी। लेकिन स्पंदन के, वापस वाइफ का खाते में हिसाब जमा होगा कि आप उस दिन टेबल ठोक रहे थे न!

अच्छा खाना बना हो, अच्छा आम हो, फर्स्ट क्लास रस निकाला हो। वाइफ ने रस और रोटी बनाई हो और फिर टेबल पर खाने बैठे, और अगर कढ़ी में ज़रा नमक ज़्यादा हो गया हो न तो कहेगा, 'कढ़ी ऐसी बनाई?' उसके बाद वह सब बिगाड़ देता है। अब अगर वाइफ ने किया हो तो उसे डाँटो। किसने किया?



**प्रश्नकर्ता :** व्यवस्थित ने।

**दादाश्री :** अपना ही, भोगने वाले के प्रारब्ध का ही है यह। इसलिए आपको न खाना हो तो मत खाना। बाकी सब खा लो। फिर जब वाइफ पूछेगी, 'आपने कहा नहीं कि कढ़ी में नमक ज्यादा था!' तब आप कहना, 'जब आप खाओगी तब आप नहीं जान जाओगी? आपको पता चलता है न! फिर मुझे कहने की क्या ज़रूरत है!'

**व्यवस्थित ही है फिर चिंता किसलिए?**

जो शरीर मिला है, वह शरीर तो अपना लेकर आया होगा न? हिसाब तो लेकर आया होगा न? दाढ़ी बढ़ाने की इच्छा नहीं है, फिर भी बढ़ती रहती है, तो फिर क्या रोटी नहीं मिलेगी? यदि यह प्रकृति रूठ जाए न, तो घड़ी भर में खुली आँखों से लाइट बंद हो जाएगी। बिल्कुल, ऐसा यह जगत् है। लाइट जल रही है, तो क्या रोटी नहीं मिलेगी? व्यवस्थित ऐसा है न, सब लेकर आया है आपका। इसलिए फिकर-चिंता जैसा नहीं है।

फिर भी कभी व्यवस्थित पर सवार नहीं होना है, व्यवस्थित को हम पर सवार होने देना है। उस पर सवार नहीं होना। अगर उस पर सवार होने जाओगे तो हालत खराब हो जाएगी। व्यवस्थित याद करते रहना नहीं है।

जिस दिन भोजन न मिले, तो उस दिन वीतराग भगवान द्वारा बताई गई आज्ञा के अनुसार आराधनपूर्वक उपवास! यह तो, जब मिलता है, उस दिन कहेगा, 'आज मेरा उपवास है।' दूसरे दिन जब किसी चीज़ का ठिकाना नहीं पड़ता और कुछ और परोसें, तब कषाय करता रहता है, 'ऐसा कहाँ से लेकर आए? ये ठंडी रोटियाँ और ये सब?' तो फिर भाई, अगर कषाय करने हैं तो उपवास मत करना, और उपवास करने

हैं तो कषाय मत करना। कषाय करने के लिए उपवास नहीं करने हैं। कषाय निकालने के लिए उपवास करने हैं।

दो बजे तक अगर भोजन नहीं मिले तो चिढ़ता रहता है, 'अरे, इस गाँव में कोई अच्छी होटल भी नहीं है। यह गाँव तो है ही खराब।' अरे भाई, तू बेकार ही गाँव को क्यों बदनाम कर रहा है। इसके बजाय कह दे ना कि 'भाई, अब साढ़े बारह बज गए हैं, एक बज गया, जो मिलेगा वही खा लेंगे।'

**चिंता किस वजह से होती है?**

**प्रश्नकर्ता :** आपने एक जगह पर लिखा है कि 'चिंता अहंकार की निशानी है।'

**दादाश्री :** हाँ, चिंता को अहंकार की निशानी क्यों कहते हैं? क्योंकि उसके मन में ऐसा लगता है कि 'मैं ही इसे चला रहा हूँ, इसका चलाने वाला मैं ही हूँ' उसी वजह से उसे चिंता होती है। ऐसा कहता है, 'इस बेटी का क्या होगा? इस बेटे का क्या होगा?' 'इसका क्या होगा, ऐसे क्या होगा, यह मकान पूरा नहीं होगा तो क्या होगा?' ऐसी चिंताएँ खुद के सिर ले लेता है। खुद अपने आपको कर्ता मानता है? 'मैं ही मालिक हूँ और मैं ही कर्ता हूँ,' ऐसा मानता है। खुद कर्ता है नहीं, फिर भी चिंता सिर पर ले लेता है। वास्तव में तो ये संयोग कर रहे हैं। सभी संयोग, साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल ऐविडेन्स (वैज्ञानिक संयोगिक सबूत) मिलने पर कार्य हो पाता है। अपने हाथ में सत्ता नहीं है। हमें संयोगों को देखते रहना है कि संयोग कैसे हैं? संयोग मिलने पर कार्य हो ही जाएगा। संयोग मिलना मतलब जैसे अगर कोई व्यक्ति मार्च के महीने में बरसात की आशा रखे तो वह गलत है और पंद्रह जून होने पर यह संयोग आ मिला, समय का

संयोग आ मिला लेकिन अगर बादलों का संयोग नहीं मिले तो बिन बादल बरसात कैसे हो सकेगी? इसीलिए कहते हैं कि बादल छा गए, समय हुआ, फिर बिजलियाँ चमकीं, अन्य एविडेन्स इकट्ठे हुए, तो बरसात हो गई! ऑन्ली साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडेन्स है यह! मनुष्य संयोगों के आधीन है और खुद ऐसा समझता है कि 'मैं कुछ कर रहा हूँ!' लेकिन वह जो कर्ता है, वह भी संयोगों के आधीन है। यदि एक भी संयोग बिखर जाए तो क्या होगा?

**जो चल रहा है, उसे क्या चलाना?**

जगत् चल ही रहा है, और लोग उसी को चलाते हैं। जो अपने आप चल रहा है, उसे क्या चलाना? और वह उठे या नहीं उठे, लेकिन सूर्यनारायण, सब उठकर तैयार, जगत् चलता ही रहता है, निरंतर चलता ही रहता है!

अभी चाय-पानी, वगैरह जो कुछ भी आप खाते-पीते हो न, वह सब व्यवस्थित के आधीन है। आप कुछ देखने या ढूँढने नहीं जाओ, फिर भी आ मिलेगा। शक्कर कहाँ से आई? हमें कोई जाँच नहीं करनी पड़ती। गन्ना किसने उगाया? क्या इसकी जाँच करनी पड़ती है? वह सब आ जाता है न? कैसे आ मिलता है? वह सेट किया हुआ क्रम है। अभी तक तो मानते थे, 'मैं ही कर्ता हूँ।' वास्तव में कर्ता नहीं हो न?

**प्रश्नकर्ता :** नहीं।

**दादाश्री :** जब सुबह उठते हो, तो कौन उठाता है? कोई दूसरी शक्ति उठाती है ऐसा लगता है या आपकी शक्ति से उठते हो?

**प्रश्नकर्ता :** नहीं, हमारी शक्ति से नहीं उठ पाते।

**दादाश्री :** हाँ, तो अन्य शक्ति है न! फिर

उठने के बाद हमें अगर जल्दी से संडास जाना हो, लेकिन नहीं जाने देता, तो कौन नहीं जाने देता? वह 'व्यवस्थित शक्ति'। फिर चाय आ जाती है न! सभी संयोगों को इकट्ठा करती है, फिर वियोग करवा देती है। वह भी व्यवस्थित शक्ति। आप लगाम को छोड़ दोगे तब भी सब मिलता रहेगा।

अगर एक दिन के लिए आप कर्तापद छोड़ दोगे तो सबकुछ मिलेगा या नहीं मिलेगा, चाय-पानी वगैरह? व्यवस्थित शक्ति निरंतर व्यवस्थित ही रखती है।

**प्रश्नकर्ता :** यदि व्यवस्थित शक्ति ही सभी से काम करवाती है, तब तो फिर मनुष्य को कुछ करने को रहा ही नहीं न! प्रोग्रेस होगी ही नहीं फिर तो।

**दादाश्री :** कर ही रहा है न! 'मैंने यह किया' कहता ही है न! और इसीलिए संसार में भटक रहा है। वह यदि व्यवस्थित को समझ जाए कि 'यह करने वाला अन्य कोई है, मैं नहीं कर रहा हूँ। मुझे गलती से ऐसा लग रहा है।' तो वह मुक्त हो जाएगा। लेकिन ऐसा नहीं है। वह तो अहंकार करता है कि 'नहीं, मैं ही कर रहा हूँ।' बाकी, उसे सिर्फ ऐसा लगता है कि 'मैं कर रहा हूँ। यह अन्य कोई तो है ही नहीं। मैं ही हूँ!'

**कुदरत के गेस्ट को नहीं रहती चिंता**

इस संसार में जितने भी जीव हैं वे कुदरत के 'गेस्ट' हैं। कुदरत आपके पास हर चीज़ तैयार करके भेजती है। यह तो आपको *कढ़ापा* (कुढ़न, क्लेश) - *अर्जपा* (बेचैनी, अशांति, घबराहट) रहा करता है, क्योंकि सही समझ नहीं है और ऐसा लगता है कि 'मैं कर रहा हूँ'। यह तो भ्रान्ति है। बाकी, किसी से इतना सा भी नहीं हो सकता।

यहाँ पर जन्म होने से पहले, हमारे बाहर निकलने से पहले लोग सारी तैयारियाँ करके रखते हैं! भगवान की सवारी आ रही है! जन्म लेने से पहले बालक को चिंता करनी पड़ती है कि बाहर निकलने के बाद मेरे दूध का क्या होगा? वह तो दूध की कुँडियाँ आदि सब तैयार ही होता है। डॉक्टर, दाईयाँ तैयार होते हैं। और दाई न हो तो नाईन भी होती ही है। लेकिन कुछ न कुछ तैयारी तो होती ही है, फिर जैसे 'गेस्ट' हों! 'फर्स्ट क्लास' के हों उसकी तैयारियाँ अलग, 'सेकिन्ड क्लास' की अलग और 'थर्ड क्लास' की अलग, सब क्लास तो हैं न? यानी कि आप सभी तैयारियों के साथ आए हैं। तो फिर हाय-हाय और अजंपा किसलिए करते हो?

**जन्म से पहले चल रहा था और मरने के बाद भी चलेगा...**

*'जन्म पहला चालतो ने मूआ पछी चालशे  
अटके ना कोई दि' व्यवहार रे,  
सापेक्ष संसार रे....'* - नवनीत।

क्या करना बाकी बचा अब आपको? जन्म से पहले भी (संसार) चल रहा था और मरने के बाद भी चलेगा। यह तो बिना बात के रुक गए हो कि मुझे चलाना है! ऐसा है न, कि यह चलता रहता है और चलता रहेगा। आप खाओ-पीओ और सो जाओ। आराम से ज़रा जूहु तक घूम आओ। इस तरह हाय-हाय किसलिए करते रहते हो? यह तो पूरा दिन काम-काम, हाय-हाय करते रहते हैं, जैसे कि कभी भी चिता में जाना ही नहीं हो ऐसा मानकर करता रहता है! हाँ, पाँच सौ, हज़ार वर्षों तक चिता में नहीं जाना हो, तब तो हम समझें कि 'हाय-हाय' भले ही करे। अभी तो बेचारे को हज़ार वर्ष निकालने हैं!' यह तो ठिकाना नहीं कि कब चिता में जाना है, कब

'फेल' हो जाए वह कह नहीं सकते! यों स्कूल में सभी में पास हुए हैं, पर इसमें फेल हो जाते हैं!

**जीते जी मर जाए, तब खत्म होगी चिंता**

यह अहंकार है कि, 'मेरे बिना चल ही नहीं सकता' ऐसा जानता है, यही समझता है कि 'मेरे बगैर नहीं चलेगा,' इसलिए चिंता करता है। वह ऐसा समझता है कि 'मैं नहीं रहूँगा तो इन सभी का क्या होगा?' अरे भाई! तुम्हारे बिना भी चल रहा था। तुम नहीं थे तब भी चल रहा था और तुम्हारे जाने के बाद भी चलेगा।

इंसान के मरने के बाद सगे संबंधी तैयार क्यों रखते हैं?

**प्रश्नकर्ता :** 'पूरा सड़ जाएगा इसलिए निकाल दो इसे जल्दी से।'

**दादाश्री :** ऐसा!

**प्रश्नकर्ता :** हाँ, दादा। फिर इसकी क्या कीमत?

**दादाश्री :** मरने वाले को कोई डर नहीं?

**प्रश्नकर्ता :** नहीं।

**दादाश्री :** क्यों?

**प्रश्नकर्ता :** मरने के बाद तो उन्हीं लोगों को डर रहता है कि 'यह सड़ जाएगा। बदबू मारेगा, निकालो जल्दी' कहेंगे।

**दादाश्री :** और अगर जीते जी मर जाए, उसे?

**प्रश्नकर्ता :** उसे तो कोई चिंता ही नहीं रहेगी दादा।

**दादाश्री :** वह जीते जी मर जाता है।

**प्रश्नकर्ता :** हाँ, उसका तो मानो यहीं पर मोक्ष हो गया, दादा।

**दादाश्री :** तुमने किसी जीते जी मरे हुए को देखा है ?

**प्रश्नकर्ता :** हम सभी।

**दादाश्री :** ऐसा! देखना किसी से कहना नहीं कि 'हम मर गए हैं!' ऐसा कहेगा तो पुलिस वाला कहेगा कि 'यह झूठ बोल रहा है।' जीवित है फिर भी कह रहा है कि 'हम मर गए हैं।' अपनी भाषा लोगों को समझ में नहीं आएगी न! बाहर लोकसंज्ञा है और यह ज्ञानी की संज्ञा है।

### जीते जी ही डुबा दो दुनिया

लोग कहते हैं कि, 'आप मरे पीछे डूब गई दुनिया। तो भाई, जीते जी ही दुनिया डुबा दे न!

हमें इस शरीर से कहना चाहिए कि 'हे शरीर! हे मन! हे वाणी! आपको कभी न कभी तो लोग जलाएँगे तो उसके बदले हम ही जला दें तो क्या बुरा है?'

यानी कि क्षत्रिय बन जाओ। जो स्वरूप अपना नहीं है, वहाँ क्या पीड़ा? 'ज्ञानीपुरुष' ने आपको ऐसा बताया है, कि यह स्वरूप अपना नहीं है, वह आपको बुद्धि से समझ में आ गया, फिर कैसी पीड़ा?

### व्यवस्थित की समझ से सेफ साइड

आपको कुछ चिंता या परेशानी है क्या?

**प्रश्नकर्ता :** अब जिसकी चिंता करनी थी वह सब तो व्यवस्थित में चला गया न! व्यवस्थित ही सबकुछ कर रहा है इसलिए फिर चिंता गई।

**दादाश्री :** हाँ, व्यवस्थित के ज्ञान को समझ जाए तो काम बन जाएगा। नहीं समझेगा तो फिर वैसा!

आप व्यवस्थित का ज्ञान समझ गए हैं इसीलिए तो बिल्कुल भी असर नहीं होता। हम ज्ञान देते हैं यानी मोक्ष देते हैं। फिर मोक्ष चला नहीं जाता, लेकिन अगर वह व्यवस्थित को समझे तो!

आत्मा को अज्ञान से मुक्त किया है। अब यह जो पिछला कर्ज है, उसका क्या करना है? तब कहते हैं, 'वह व्यवस्थित ही है। उसका जो परिणाम आएगा उसे तुझे देखते रहना है।' हमारी इतनी आज्ञा का पालन करेगा, तो निरंतर मोक्ष रहेगा, आपको कुछ करना ही नहीं पड़ेगा। आप ज्ञाता-दृष्टा रहोगे तो यह काम अच्छी तरह चलेगा, रेग्युलर चलेगा। और ज़रूरत से ज्यादा अक्ल लड़ाओगे तो सब बिगड़ जाएगा।

यदि व्यवस्थित समझ में आ जाए, तो दादा ने तो वह सेफ साइड वाला दिया है, लेकिन खुद अगर ज़रूरत से ज्यादा अक्ल लड़ाओगे तो अनसेफ हो जाएगा!

### संसार का असर न हो, उसे कहते हैं मुक्ति

भगवान कहते हैं कि चिंता करने वाले के लिए दो दंड हैं और चिंता नहीं करने वाले के लिए एक दंड है। अट्ठारह साल का एकलौता जवान बेटा मर जाए तो उसके बाद जितनी चिंता करते हैं, जितना दुःख मनाते हैं, सिर फोड़ते हैं, और जो कुछ भी करते हैं, उनके लिए दो दंड हैं और जो ये सब नहीं करते, उनके लिए एक ही दंड है। बेटा मर गया, उतना ही दंड है और सिर फोड़ा, वह अतिरिक्त दंड है। हम ऐसे दो तरह के दंड में कभी भी नहीं आते। इसलिए मैंने इन लोगों से कहा है कि, "पाँच हजार रुपये की जेब कट जाए तब 'व्यवस्थित' कहकर आगे निकल जाना और चैन से घर चले जाना।" तो कोई परेशानी ही नहीं रहेगी न! उसे मुक्ति कहते हैं। संसार असर न करे उसे मुक्ति कहते हैं।

## विचार समर्पित करके हो जाओ चिंतामुक्त

इसलिए हर एक ने यही कहा है कि व्यर्थ चिंता क्यों करते हो? आपको तो सिर्फ क्या करना है? सहज भाव से विचार करने हैं। और जब विचार एब्नॉर्मल (असामान्य) हो जाएँ तब उसे चिंता कहा जाता है। विचार में एब्नॉर्मैलिटी होने से चिंता होती है। तब बंद कर देना है आपको। जैसे अगर तेज आँधी आ रही हो तो हम दरवाज़े बंद कर लेते हैं न? उसी तरह जब अंदर विचार एब्नॉर्मली आगे बढ़ें तो बंद कर देने हैं, वरना फिर वे चिंता के रूप में हो जाएँगे। फिर तरह-तरह के भय और तरह-तरह का दिखाएँगे। अतः उस दिशा में जाना ही नहीं चाहिए। सिर्फ आवश्यक हो उतने ही विचार! बाकी बंद!

हमने तो, अच्छे विचार आएँ या बुरे, दोनों ही समर्पित कर दिए हैं। हमारा और उनका लेना देना नहीं है। क्या-क्या विचार नहीं आएँगे? ज़रा सी तबियत खराब हुई तो कहेगा, 'मर जाऊँगा या न जाने क्या होगा?' ऐसा विचार भी आता है। आता है या नहीं आता? उन सभी को समर्पित कर देना है।

## निर्भय होकर रहो

**प्रश्नकर्ता :** ज्ञान के बाद मृत्यु का भय नहीं है, लेकिन मृत्यु के समय जो दुःख होता है, उसका डर लगता है।

**दादाश्री :** दुःख कैसा?

**प्रश्नकर्ता :** शारीरिक व्याधि।

**दादाश्री :** उसमें डर कैसा? 'व्यवस्थित' है न? 'व्यवस्थित' में अंधे होना होगा तो अंधा हो जाएगा, फिर उसका डर कैसा? 'व्यवस्थित' हमने 'एक्स्पैट' किया है, फिर कभी कुछ स्पर्श नहीं करेगा, कोई भय रखने जैसा नहीं है। निर्भय होकर घूमो।

मोक्ष चाहिए तो जान की बाज़ी लगाने का खेल है। शूरवीरता अर्थात् शूरवीरता! ऊपर से एटम बोम्ब गिरे लेकिन बिल्कुल भी विचलित नहीं हो, वह शूरवीरता कहलाती है। और यदि आप शुद्धात्मा स्वरूप हो, मैंने जो स्वरूप आपको दिया है उस स्वरूप में रहो तो कुछ भी छू सके, ऐसा नहीं है।

आप अब निःशंक हुए। अब आज्ञा में रहो। यह देह चली जाए तो भले ही चली जाए, कान काट ले तो भले ही काट ले, पुद्गल (जो पूरण और गलन होता है) दे देना है। पुद्गल पराया है। पराई चीज़ हमारे पास रहेगी नहीं। वह तो 'व्यवस्थित' का टाइम होगा, उस दिन चली जाएगी। इसलिए 'जब लेना हो तब ले लो' ऐसे कहना चाहिए। भय नहीं रखना है। कोई नहीं लेगा। कोई फालतू भी नहीं है। हम कहें कि 'ले लो', तो कोई नहीं लेगा, लेकिन उससे हमें निर्भयता रहती है। 'जो होना हो वह हो', ऐसा कहना।

## ज्ञानी वेदे धैर्य से, अज्ञानी वेदे रोकर

**प्रश्नकर्ता :** बाहर की फाइलें इतनी अधिक परेशान नहीं करतीं, लेकिन अंदर की शाता-अशाता (सुख परिणाम-दुःख परिणाम) में एकाकार हो जाते हैं।

**दादाश्री :** शाता-अशाता को तो एक ओर ही रख देना चाहिए। शाता में प्रमाद हो जाता है, अजागृति रहती है। शाता-अशाता की तो बहुत परवाह नहीं करनी चाहिए। अशाता आए, हाथ में जलन हो रही हो तो हमें कहना चाहिए कि, "हे हाथ! 'व्यवस्थित' में हो तो जलो या स्वस्थ रहो।" तो जलन हो रही होगी तो बंद हो जाएगी, क्योंकि हम जला देने की बात करें, फिर क्या होगा? कभी भी सहलाना नहीं चाहिए। यह पुद्गल है। 'व्यवस्थित' के ताबे में है। उसकी

अशाता वेदनीय जितनी आनी हो उतनी आए। शूरवीरता तो चाहिए न? नहीं तो भी रो-रोकर तो भुगतना, इसके बदले हँसकर भोगे तो क्या बुरा है? इसीलिए तो कहा है न, “ज्ञानी वेदें धैर्य से, अज्ञानी वेदे रोकर।”

आधा पैर टूट गया हो तो हम कहें, चलो डेढ़ तो रहा न! फिर आधा चला जाए, तब हम कहें कि दो के बदले एक तो रहा न? ऐसे करते-करते अंत में सभी पार्ट्स टूट जाएँ, तब अंत में हम आत्मा तो हैं न? अंत में तो सभी पार्ट्स टूट ही जाएँगे न? पेट्रोल छिड़ककर आग लगा दी जाए, तब भी हम आत्म स्वरूप हैं! कभी न कभी जलेगा ही न! नहीं जलेगा? सिर्फ थोड़ा अभ्यास करने की ज़रूरत है। महाराज नंगे पैर कैसे चल पाते हैं? किसान कैसे चल पाते हैं? दो-चार बार जलने पर अपने आप सब रास्ते पर आ जाता है। वर्ना जो वेदना एक (दवाई की) गोली से शांत हो जाए, उसे वेदना कहेंगे ही कैसे? सौ-सौ गोलियाँ खाने पर जो भी वेदना शांत न हो, उसे वेदना कहते हैं।

अब तो आपका कुछ नहीं है। ‘ज्ञानीपुरुष’ को सबकुछ समर्पित कर दिया। मन-वचन-काया और सर्व माया, भावकर्म-द्रव्यकर्म-नोकर्म सबकुछ ही अर्पण कर दिया। फिर आपके पास कुछ भी बाकी नहीं रहता।

**जीते जी मर जाएगा तो मन से मुक्त हो जाएगा**

अब आपको शुद्धात्मा मिल गया है इसलिए ‘यह सब व्यवस्थित है’ और वह किसी से भी बदला नहीं जा सकता। मन में जो भाव है, वे प्रकट हुए बगैर रहेंगे नहीं क्योंकि कान सुने बगैर रहेंगे नहीं, उसी प्रकार से यह जो मन है वह बोले बगैर रहेगा नहीं। यह जो भी बोले, यदि अपने काम का हो तो सुनना। काम का नहीं हो तो

कहना ‘तुम्हारी बात ठीक है, अब हम सावधान रहेंगे।’ ताकि फिर वह आगे की बात करे और जो दिखाई देते हैं न, अवस्था, पर्याय वे आपको खबर देते हैं कि, ‘ऐसा हो जाएगा तो, वैसा हो जाएगा तो?’ उसमें हमें क्या हर्ज है? हम जानते हैं कि व्यवस्थित है। वह फिर कहेगा, फिर वह आगे की बात करेगा। उसे ऐसा नहीं है कि वैसी ही बातें करता रहे। जब तक सिर्फ अज्ञान था, तब तक मन में तन्मयाकार हो जाते थे। तब खुद दुःखी हो जाते थे।

मन को धकेलना नहीं है, मारना भी नहीं है। किसी को मारकर कभी भी आप मोक्ष में नहीं जा सकोगे। मन से कहना, ‘तू अपनी तरह से जी।’ हम हमारी जगह पर, अपने स्थान पर हैं और तू अपने स्थान पर है।

मन से अलग कैसे रह सकते हैं? अगर जीते जी मर जाएँ तो मन से अलग हो जाएँगे।

**रोना है, ज़रूरत से ज्यादा अक्लमंदी का**

**प्रश्नकर्ता :** विचार आता है, वह तुरंत ही चला जाता है या फिर तुरंत ही नवकार मंत्र बोल लेता हूँ।

**दादाश्री :** हाँ, लेकिन जो हो रहा है उसे देखते रहना है। बीच में आप कौन हो? मेरा ऐसा कहना है कि आपको यह ज्ञान देने के बाद आप शुद्धात्मा हो, चंदूभाई व्यवहार से हो।

**प्रश्नकर्ता :** आपकी तरह यदि पच जाता और निरंतर चौबिसों घंटों...

**दादाश्री :** मेरी तरह ही रह सकता है। कोई यदि ज़रूरत से ज्यादा अक्लमंदी न करे न, तो मेरी तरह ही रह सकेगा और कई लोगों को ऐसा रहता भी है।

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन जरूरत से ज्यादा अक्रलमंदी करता है उसका क्या?

**दादाश्री :** जो हो जाता है, उसी को संभालना है। आपको कैसा रहता है? मन में ऐसे विचार आएँ तो उन्हें देख पाते हो?

जब मन में विचार उठते हैं तो उस स्थिति में विचार सजीव नहीं हैं, निर्जीव चीज़ है। अर्थात् मन से कहना है 'तुझे जो सोचना है सोच।' यदि तालाब में चेहरा देखने जाए तब भी मन कहेगा, 'अंदर डूब जाएँगे तो?' मन तो कुछ भी बोल सकता है और शायद इज़्जत भी उतार ले। मन जो भी सोचे उसे हमें देखते रहना है। सोचना उसका स्वभाव है, वह यंत्रवत् है। उसे हम मना करेंगे तब भी विचार तो आते ही रहेंगे, यदि हम उसमें एकाकार हुए तो हम से चिपकेंगे लेकिन अगर एकाकार नहीं हुए तो नहीं चिपकेंगे।

**देहाध्यास में मारकर, आत्मा में जीवंत किया**

आप यदि पाँच मिनट पहले का सोचते हो न, तो मैं समझ जाता हूँ कि 'यह जीवित है!' मैंने 'आपको' (देहभाव से) मार दिया है। फिर वापस जीवित होने क्यों उठते हो? मारने के बाद तो स्व में जीवित रहने को ही मोक्ष कहते हैं। ज्ञानीपुरुष क्या करते हैं? (देहाध्यास में) मार देते हैं, और (आत्मस्वरूप में) जीवंत कर देते हैं। उसके बाद का जीवन मोक्ष है। उसके बाद अगर आप सोचने लगे तो मैं समझ जाता हूँ कि 'ओहोहो, यह तो अभी भी जीवित है।'

जहाँ पर ज्ञान है, वहाँ एक भी सांसारिक विचार नहीं आना चाहिए। हमें एक भी सांसारिक विचार नहीं आता। यानी सबकुछ खाली हो जाना चाहिए।

**प्रश्नकर्ता :** हो जाना चाहिए या कर देना चाहिए?

**दादाश्री :** हो जाना चाहिए। यह मार्ग ऐसा है कि आपको खाली करना नहीं पड़ेगा। अपने आप ही खाली होता रहेगा। हमारी आज्ञा में रहोगे तो खाली होता रहेगा।

**व्यवस्थित ही चला लेगा**

अब व्यवस्थित ही आपका सब चला लेता है। आपको जो चाहिए वह आपके पास आ जाएगा। आपको जिस चीज़ की इच्छा होगी वह चीज़ आपके पास आ जाएगी, यह 'ज्ञान' ऐसा है कि आपको मेहनत भी नहीं करनी पड़ेगी। अलौकिक विज्ञान है। अतः आपको तो यहाँ काम निकाल लेना है।

**प्रश्नकर्ता :** इस व्यवस्थित को समझने के बाद किसी बात का तंत नहीं रहता।

**दादाश्री :** फिर तो दखल ही नहीं रहेगा न! यह 'व्यवस्थित', हमने देखकर कहा है।

इसलिए बाहर की बात में आपको चिंता करनी ही नहीं है। आप निरंतर अपने स्वरूप में रहो। आपके हिसाब के अनुसार सब आपके पास आएगा। मेरो भी सब हिसाब के अनुसार ही आता है। ऐसा कलयुग है, दुषमकाल है, मुंबई जैसी मोहनगरी है, फिर भी मुझे कुछ असर नहीं होता और बीस सालों से निरंतर समाधि रहती है। बोलो अब, आजकल इस मोहमयी नगरी में ऐसा होता होगा? लेकिन यह विज्ञान ही अलग है, अक्रम विज्ञान है, तुरंत ही मोक्षफल देता है।

**जो हो रहा है उसे देखते रहो**

यह तो अपना अक्रम विज्ञान है। इसलिए 'जैसा है वैसा' जगत् बता (कह) दिया कि इतना अपने आप चल रहा है। अतः आपको परेशानी होने जैसा कुछ है ही नहीं।



व्यवस्थित का एक्जेक्ट अर्थ यही है कि जो हो रहा है, उसमें तेरा कर्तापन नहीं है, तुझे कुछ लेना-देना नहीं है! चाहे कुछ भी हो, फिर भी! फिर अगर 'चंदूभाई' भयंकर कृत्य कर रहा हो, तो ऐसा नहीं होना चाहिए कि अब 'मेरा' क्या होगा? उसे भी 'देखते' ही रहना है। ऐसा व्यवस्थित दिया है। चंदूभाई को जो हो रहा हो, उसी को देखते रहना है। फिर जिसे देख रहा है वह दृश्य है और खुद दृष्टा। हमेशा यह व्यवहार चलते रहना चाहिए। लेकिन अगर समझ में नहीं आए तो, क्या हो सकता है? दूसरे रास्ते दिखाने पड़ते हैं। नहीं तो, एक्जेक्ट मोक्ष दिया है।

### जो आज्ञापालन करता है, उसके लिए है व्यवस्थित

**प्रश्नकर्ता :** ज्ञान लेने के बाद, जिसे समकित् प्राप्त हुआ है, यह 'व्यवस्थित' शब्द उसके लिए है। जिसे समकित् नहीं हुआ है, जिसने ज्ञान नहीं लिया है, उसके लिए यह 'व्यवस्थित' शब्द नहीं है।

**दादाश्री :** समकित् तो हो चुका हो लेकिन हमारी आज्ञा का पालन करता है, 'व्यवस्थित' उसी के लिए है। अर्थात् जिसकी वृत्तियाँ आज्ञावश हो चुकी हैं तो फिर वह उस अनुसार ही रहेगा। बात को अगर पूरी तरह समझे तो बार-बार ऐसा नहीं कहेगा कि यह व्यवस्थित है। ऐसा सब समझ में आ ही चुका होता है। उसकी हकीकत समझ जाता है कि यह सिद्धांत क्या है? जिसे आज्ञा का पालन करना है उसका तो एक हिस्सा ही बन जाती है। इसलिए हम कहते हैं न कि यदि सत्तर प्रतिशत तक आज्ञापालन करेगा तो चलेगा।

**प्रश्नकर्ता :** ये महात्मा जिन्होंने ज्ञान लिया है, उनका डिस्चार्ज अब व्यवस्थित है, जो आज्ञा में रहते हैं उनका! और जिन्होंने ज्ञान नहीं लिया

है उनका डिस्चार्ज व्यवस्थित नहीं है, यह बात सही है?

**दादाश्री :** सही, बिल्कुल सही!

### अहंकार को मारकर जीवित किया ज्ञानी ने

**प्रश्नकर्ता :** जब तक अहंकार है तब तक जगत् अव्यवस्थित ही है?

**दादाश्री :** जगत् है व्यवस्थित, लेकिन अहंकार है इसलिए उल्टा किए बगैर रहता नहीं, व्यवस्थित को अव्यवस्थित कर देता है! अहंकार कब पागलपन करने लगे, वह कह नहीं सकते। फोन पर सौदा किया कि 'हजार गठरी ली।' दूसरे ने ली इसलिए इसने भी ली, वह तो श्रीमंत व्यक्ति था और इसे तो लाख रुपए का नुकसान हो जाए तो हालत बिगड़ जाएगी न!

**प्रश्नकर्ता :** हाँ।

**दादाश्री :** इसलिए अव्यवस्थित कर डालता है क्योंकि अहंकार जीवित है। जीवित व्यक्ति हो, और फिर जग रहा हो और रात को क्रोकरी के बरतन फूट गए, दो सौ-पाँच सौ रुपयों के तो क्या होगा? जीवित, जगता हुआ और ज्ञान नहीं मिला हो, क्या होगा उसे?

**प्रश्नकर्ता :** कढ़ापा - अजंपा!

**दादाश्री :** नींद ही नहीं आएगी उसे और जिसने तोड़ दिए हैं, उसका नाम लिया तो झगड़ा हो जाएगा। इसलिए मन ही मन में कलह करता रहेगा, 'अरे, यह कहाँ से आया? यह ऐसा बेटा क्यों मिला, बोलने जाए तो झगड़ा हो जाएगा। बोल भी नहीं पाता और पूरी रात मन में कलह करता रहता है।

अब अगर वह सो रहा हो तो? सवेरे काँच के टुकड़े दूर फेंक आए, तो चलेगा या नहीं चलेगा?

**प्रश्नकर्ता :** पता नहीं चलेगा।

**दादाश्री :** और यदि वह मृत है तो?

**प्रश्नकर्ता :** मरने के बाद, तो फिर उसे कुछ होगा ही नहीं न!

**दादाश्री :** और मरकर जीए तो? मरने के बाद जीए तो?

**प्रश्नकर्ता :** वह तो ज्ञानी, अमर हो जाएगा।

**दादाश्री :** मरकर जीता, वह तो बस देखता व जानता है, इतना ही! फिर वह ममता में मर जाता है।

आपको मैंने मारकर जीवित किया है! समझ में आया न?

जीते जी मार डाले, तो फिर बचा क्या? व्यक्ति बाहर से जीवित रहेगा और अंदर से मर जाएगा। जबकि यह बाहर मर गया और अंदर जीवित है।

**जीते जी मर जाएँगे तो मुक्त हो जाएँगे**

जीते जी मर जाना तो कैसा है कि हम अभी हैं और फिर जैसे मर जाएँ। मरने के बाद वहाँ पर पंद्रह-बीस प्यालों का, वह जो दो सौ-पाँच सौ रूपये का एक पूरा सेट था, उसे बिल्ली ने गिरा दिया। नीचे गिर जाए तब, ऐसे जैसे कि हम मरे हुए हैं, तो फिर असर नहीं होगा।

**प्रश्नकर्ता :** ठीक है।

**दादाश्री :** जो जीवित हैं उन्हें असर होता है। हम तो अब मर चुके हैं। फिर कैसा असर? हमें क्या रहना चाहिए?

**प्रश्नकर्ता :** असर नहीं होना चाहिए। असर होगा भी तो वह मरे हुए भाग पर होगा। यह जीते जी मर जाने की बात है। इसलिए ऐसा रहता है कि जिसे यह असर हो रहा है वह मृत भाग है।

**दादाश्री :** नहीं, असर होना ही नहीं चाहिए। अगर वह ऐसा कहे कि हम तो मर चुके हैं अब हमें क्या लेना-देना? ऐसा कहते ही मुक्ति।

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन दादा, मुक्ति किससे? असर वाले भाग से?

**दादाश्री :** उससे! असर से!

**प्रश्नकर्ता :** असर से मुक्ति यानी असर वाले भाग से मुक्ति न?

**दादाश्री :** मेरा कहना है कि यों जीते जी मर जाएगा न, तो सभी से मुक्त हो जाएगा।

**मनचाहे संयोगों में हो जाता है जीवित**

लेकिन वह मरता नहीं न जीते जी?

**प्रश्नकर्ता :** ऐसा संभव नहीं है, दादा।

**दादाश्री :** जब उसकी पसंदीदा बात आती है न, तब जीवित हो जाता है। नापसंद हो तब लेट गो (जाने देता है) करता है कि 'चलो, प्याले तो टूट गए, जाने दो।' कप-प्लेट भले ही टूटें, लेकिन जहाँ मनपसंद बात आती है, वहाँ जीवित हो जाता है।

खुद की मनपसंद बात आती है और फिर नापसंद बात भी आती है, 'उसे' पसंदीदा और नापसंद संयोग मिलते हैं। अब जब मनपसंद आता है, तब उनमें वीतराग क्या कहते हैं कि 'इनमें से कोई भी चीज़ पसंद करने जैसी नहीं है और नापसंद करने जैसी भी नहीं है, इनसे 'तू' अलग रह, क्योंकि नापसंद करने जैसी कोई चीज़ है ही नहीं। फिर भी 'तू' अपने आप बंध रहा है कि 'यह चीज़ अच्छी है।' अगर इसे अच्छी कहा तो दूसरे को खराब कहेगा। एक को अच्छा कहा तो दूसरे को खराब कहेगा ही। यह विभाजन तो हम लोगों ने ही किया है कि 'यह संयोग अच्छा है और यह संयोग खराब है।'

अतः वीतरागों ने इन सभी संयोगों को ऐसा ही कहा है कि, 'ये सभी संयोग ही हैं और फिर ये संयोग वियोगी स्वभाव वाले हैं, इसलिए किसी भी संयोग को पसंद मत करना ताकि नापसंद संयोग को तुझे धक्का नहीं मारना पड़े। यदि तू धक्का लगाने जाएगा तो तेरा मोक्ष चला जाएगा। कोई भी नापसंद संयोग मिल जाए, तब यदि उस घड़ी तू उस संयोग को धक्का मारेगा तो तू फिर से उलझन में फँस जाएगा। इसलिए उस संयोग को धक्का मारने के बजाय उसे समताभाव से तू पूरा कर। और वह वियोगी स्वभाव का ही है। इसलिए अपने आप वियोग हो ही जाएगा, तुझे कोई झंझट ही नहीं। और फिर भी यदि उस नापसंद संयोग के सामने तू उल्टा रास्ता करने जाएगा, तब भी काल तुझे छोड़ेगा नहीं, उतने काल तक तुझे मार खानी ही पड़ेगी। अतः यह संयोग वियोगी स्वभाव वाला है, उस आधार पर धीरज रखकर तू चलने लग।'

इन गजसुकुमार को मिट्टी की पगड़ी बाँध दी थी उनके ससुर ने उसमें अंगारे रखे थे। उस घड़ी गजसुकुमार समझ गए कि यह संयोग मुझे मिला है और उसमें, ससुर ने मोक्ष की पगड़ी बंधवाई है, ऐसा संयोग मिला है। अब यह उन्होंने 'बिलीफ' में ही माना कि यह मोक्ष की पगड़ी बंधवाई है और उसमें अंगारे रखे। अब नेमिनाथ भगवान ने गजसुकुमार से कहा था कि, "तेरा" स्वरूप 'यह' है और यह संयोग 'तेरा' स्वरूप नहीं है। संयोगों का 'तू' ज्ञाता है। सभी संयोग ज्ञेय हैं।" अतः वे 'खुद' उन संयोगों में भी ज्ञाता रहे, और ज्ञाता रहे इसलिए मुक्त हो गए और मोक्ष भी हो गया। वर्ना, कल्पांत करके भी मनुष्य मर तो जाता ही है। मरने का समय हुआ और कल्पांत करके मरे, तो उस कल्पांत करने का फल मिलेगा।

जिसका अहंकार मर गया, वह जीते जी मर गया

**प्रश्नकर्ता :** दादा, 1958 से 1984 आ गया, लेकिन कोई भी यों जीते जी मरकर नहीं रह पाया है!

**दादाश्री :** नहीं! कोई नहीं। ऐसे जीते जी मरना किसे कहते हैं?

**प्रश्नकर्ता :** जो आपके संपर्क में आ गए।

**दादाश्री :** नहीं! जिन्होंने यह ज्ञान नहीं लिया है, उनके लिए कहा है कि जीते जी मर जाना।

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन वह तो हो नहीं सकता न, दादा।

**दादाश्री :** ऐसा हो नहीं सकता लेकिन कहने वाले ने यह कहा तो है! उसे उदाहरण अच्छा लगा, लेकिन जब तक मर न जाए तब तक पता चलता है न जीवित है! इसलिए मर नहीं सकता। जबकि हमारे यहाँ तो यह जीते जी मृत जैसा ही हो गया है न! पूरी तरह शांति हो गई। हमारे ज्ञान देने के बाद अहंकार और ममता मर जाते हैं।

हम लोगों में अहंकार मर चुका है। डिस्चार्ज अहंकार! अहंकार है लेकिन डिस्चार्ज।

**प्रश्नकर्ता :** जीवित नहीं है?

**दादाश्री :** जीवित नहीं है जिसका अहंकार मर चुका है, उसे जीते जी मृत कहते हैं। अहंकार मर गया है या नहीं वह टेस्ट करने के लिए क्या करना पड़ेगा?

**प्रश्नकर्ता :** उसे गालियाँ देनी पड़ेंगी।

**दादाश्री :** हाँ, अपमान करने पर अपने आप

पता चल जाएगा। जीवित अहंकार होगा तो फुफकारेगा या नहीं? आपने फन देखा है क्या? ऐसे फूँककारता है।

यह ज्ञान देने के बाद आपको चिंता नहीं होती। क्योंकि अहंकार और ममता चले गए हैं। इसलिए संसार आराम से चलता रहता है। संसार चलाने के लिए जीवित अहंकार की जरूरत नहीं है। अगले जन्म बंधन के लिए उस अहंकार की जरूरत है। हाँ, जिसे अगले जन्म के लिए (कर्म) बंधन नहीं चाहिए, अगर उसके पास जीवित अहंकार नहीं होगा तब भी उसका संसार व्यवहार चलता रहेगा। यह पूरा संसार डिस्चार्ज रूपी है। डिस्चार्ज अर्थात् जो अपने आप ही चलता ही रहेगा। खाने-पीने का सब मिलता रहेगा, लड़कों की शादी होगी, लड़कियों की शादी होगी, वह सब होता ही रहेगा।

**प्रश्नकर्ता :** आप कई बार कहते थे लेकिन मुझे समझ में नहीं आता था कि जीते जी कैसे मरना है? वह आपने समझा दिया।

**दादाश्री :** हाँ! वह भी यह ज्ञान देकर न! तब अहंकार और ममता दोनों मर गए।

**प्रश्नकर्ता :** मर गए, हाँ।

**दादाश्री :** वे जीते जी ही मर गए न?

**प्रश्नकर्ता :** वे जीते जी मर गए!

**मृत का रोल अदा करे तो वह हेल्पिंग हैं**

कृपालुदेव ने लिखा है कि 'अगर जीते जी मर जाएँगे तो फिर मरना नहीं पड़ेगा।' वह बात तो सच है, दीये जैसी। उसके बाद बहुत से लोगों ने प्रयत्न करके देखा लेकिन कुछ होता नहीं न!

**प्रश्नकर्ता :** बल्कि दृढ़ हो जाता है।

**दादाश्री :** नहीं! दृढ़ हो जाता है ऐसा तो नहीं कह सकते लेकिन ऐसा है कि कोई से मर नहीं पाता। देखने जाएँ तो उपाय अच्छा है लेकिन जब पसंद वाली बात आती है, तब उस समय जीवित हो जाता है।

**प्रश्नकर्ता :** हाँ, इसीलिए दृढ़ हो गया है न! जब ये व्यसन छोड़ता है कि 'मैंने बीड़ी छोड़ दी, शराब छोड़ दी। मैं शुभ क्रियाएँ करता हूँ, मैं अशुभ क्रियाएँ करता हूँ,' तब वह कर्ता के रूप में तो रहता ही है न!

**दादाश्री :** ऐसे मरे हुए का पार्ट अदा करे न, वह तो अच्छा है। ऐसा है कि जब अपने इस ज्ञान में भी नहीं रह पाते, तब बल्कि मरे हुए का पार्ट अदा करना अच्छा है। हेल्पिंग है वह।

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन दादा! क्या वह विरोधाभासी नहीं लगता? मरने के बाद फिर पार्ट कैसे अदा करेगा।

**दादाश्री :** देखो न, अगर उसके सोने के बाद सभी (प्याले) फोड़ दिए जाएँ, तो उसमें उसे कुछ नहीं होता। जबकि यह तो जागता है! जागते हुए यह सीधा नहीं रहता, सोते समय सीधा रहता है।

वर्ना, नींद में तो अगर लोग उसके घर में से सब कुछ ले जाएँ तो भी वह आराम से सोता रहेगा लेकिन जागते हुए पाँच रूपये भी नहीं लेने देता, मारा-मारी करता है। 'भाई, आपका खून हो जाएगा, ऐसा विरोध क्यों कर रहे हो? लेकिन नहीं, 'यहाँ से जाने क्यों दें? तो भाई! अगर सो रहे हों तब तो चले ही जाते हैं न!

**जो जागते हुए सोए, उस पर नहीं होगा  
असर**

इसलिए हमने क्या कहा है कि थोड़ा बहुत

जागते हुए सोना पड़ेगा। जागते हुए सोने का मतलब क्या है कि अगर हम जाग रहे हों और प्याला फूट जाए तो उस समय हम पर ऐसा असर होना चाहिए जैसे कि सो रहे थे और प्याला फूट गया। असर में फर्क नहीं पड़ना चाहिए। हम अगर सो रहे हों और प्याला फूट जाए तब कैसे सयाने रहते हैं। जब जागते में फूट जाए तब इसमें बीच में कौन भूत घुस गया? वह अहंकार और ममता का भूत घुस गया। उस भूत को आप पहचानो। इसलिए फिर जागते हुए सो पाएँ यानी खुली आँखों से सोना, तो फिर कोई झंझट ही नहीं रहेगी न! उसमें क्या बुरा है?

इस जगत् में यदि जगते हुए सोएँगे तो तभी सुख रहेगा वर्ना अगर जाग रहा होता तो क्या करता? अरे, वह गिर गया, अरे, ऐसा हो गया! वैसा हो गया! क्या उस घड़ी सुख रहता है? सोने के बाद सुख आता है न? तो जो जगते हुए मर जाए उसकी तो बात ही और है न! देखो, हम जगते हुए मर गए हैं। जीते जी मर गए हैं न! है कोई झंझट? अगर जीते जी मर जाएँ तो फिर से नहीं मरना ही पड़ेगा। क्या आपको जीते जी मरना है? हम जीते जी मरे हुए हैं।

### ‘मुर्दा’ जीवित नहीं है, उस दृष्टि से जगत् निर्दोष

कृपालुदेव ने कहा है कि ‘मरकर जीयो’, तो ‘मरकर जीने’ योग्य है यह। मरा हुआ व्यक्ति जीये, और अगर प्याले फूट जाएँ तो उसे प्यालों से क्या लेना देना? अतः कृपालुदेव ने जो कहा है वह तो विकल्प बताया कि ‘भाई, तू पहले मर जा न! उसके बाद जीना!’ लोगों ने तो वह विकल्प भी अपनाकर देखा लेकिन विकल्प काम नहीं आया। यह तो एक्झेक्ट है, फिर क्या हर्ज है?

**प्रश्नकर्ता** : ज्ञानीपुरुष के सामने (समझकर) जीते जी ही मर जाना है।

**दादाश्री** : जीते जी मरना है। अगर जीते जी मर जाएँ, तो फिर से नहीं मरना पड़ेगा और मरकर जीये, तब अगर प्याले फूट जाएँ तो, मरकर जीने वाले को प्याले टूटने से कोई दिक्कत नहीं है। जीवित को ही दिक्कत है।

**प्रश्नकर्ता** : अपनी (ज्ञान) भाषा में तो ऐसा ही हुआ कि मरा हुआ भाग भले ही जीवित दिखाई दे लेकिन वह मरा हुआ ही है।

**दादाश्री** : मरा हुआ ही है। ये लोग तो मरे हुए पुद्गल पर सख्ती करते हैं। वह पुद्गल जीवित नहीं है। यदि वह जीवित होता तो ठीक था लेकिन मरे हुए पर क्या सख्ती करनी? मरे हुए का क्या अपमान करना? जगत् को जीवित लगता है, भगवान को जीवित नहीं लगता। जो जीवित नहीं है उसे गाली देने का क्या अर्थ है? अपना ही बिगड़ेगा न? किसका बिगड़ेगा? किचकिच करने वाले का बिगड़ेगा।

जगत् को कैसा लगता है? वही है, वही है। उसके अलावा और कौन है करने वाला? और भगवान को जगत् कैसा लगा था?

**प्रश्नकर्ता** : निर्दोष।

**दादाश्री** : निर्दोष क्यों लगा? यह जीवित नहीं है, इसलिए। लोग तो, जो जीवित नहीं है उसे जीवित कहते हैं।

क्या चाबी के खिलौने वाला साँप काटता है? क्यों नहीं काटेगा, ऐसे दौड़ता हुआ आए फिर भी? काटता नहीं है चाबी वाला साँप?

**प्रश्नकर्ता** : नहीं।

**दादाश्री** : ऐसा है यह सब। जैसे चाबी भरी होगी उसी तरह घूमता रहेगा।

रात को सोने जाए, ग्यारह बजे हों और

ओढ़कर सोने के बाद तुरंत विचार आए कि 'खाते में उस एक लाख रूपये वाली एन्ट्री पर साइन करवाना रह गया। अब अगर वह नहीं करेगा तो क्या होगा? तो हो गया काम भाई का! फिर तो वह ऐसा हो जाता है जैसे मुर्दा जी उठा है।

इसलिए ऐसा समझकर हमें सीधे हो जाना है कि यह जीवित नहीं है। अगर कोई हमें गाली दे न, तो हमें समझना है कि यह जीवित नहीं है। ऐसा समझने से हमें कोई दिक्कत तो नहीं होगी न!

### पूरा डिस्चार्ज भाग मृत ही है।

**प्रश्नकर्ता :** आप ज्ञान देते हैं उसके बाद तो डिस्चार्ज ही बचता है, फिर चार्ज होता ही नहीं, तो क्या वास्तव में यह मृत ही है? अब और कुछ भी नहीं है?

**दादाश्री :** मृत ही है। अब आप यों डिस्चार्ज स्वरूप को और मुर्दे को, दोनों को समान मत समझना लेकिन किसी भी चीज़ का डिस्चार्ज अर्थात् मृत। जिसमें अब (ज्ञान के बाद) चार्ज नहीं होगा और अपने आप ही डिस्चार्ज होता जा रहा है, वह मुर्दा कहलाएगा।

जिसके डिस्चार्ज होने की शुरुआत हो गई, उसे हम मुर्दा ही कहते हैं। फिर अपना यह जो डिस्चार्ज भाग बाकी बचा है न वह पूरा ही मृत है। जिसमें चार्ज और डिस्चार्ज दोनों एक साथ होते हैं, तब उसे चेतन (मिश्र चेतन) कहते हैं।

निश्चेतन चेतन, में अहंकार मृत है और मिश्र चेतन में जीवित अहंकार है। मिश्र चेतन जीवित है।

**प्रश्नकर्ता :** जीवित यानी ?

**दादाश्री :** खुद सब कर सकता है। क्रोध-मान-माया-लोभ भी कर सकता है।

ये क्रोध-मान-माया-लोभ निश्चेतन-चेतन के नहीं माने जाते। जिनमें अहंकार तन्मयाकार नहीं होता, वह सब तो मुर्दे का ही है।

### ज्ञान के बाद बचता है शुद्धात्मा और बाकी का सब मृत

आपको यह ज्ञान देने के बाद आपका अहंकार सिके हुए बीज जैसा हो जाता है। वह सारा अचेतन चेतन है। और जो अहंकार ऐसा हो कि उग सके, वह मिश्र चेतन है।

क्रमिक मार्ग में एक तो शुद्ध चेतन है और एक मिश्र चेतन है। और अपने यहाँ अक्रम में मिश्र चेतन है तो सही, लेकिन वह ज्ञान के बाद काम नहीं करता और तीसरा, निश्चेतन चेतन है। बाहर दुनिया में शुद्ध चेतन, मिश्र चेतन और निश्चेतन चेतन हैं। आप में सिर्फ दो, शुद्ध चेतन और निश्चेतन चेतन ही हैं।

**प्रश्नकर्ता :** यानी मिश्र चेतन नहीं लेकिन निश्चेतन चेतन है ?

**दादाश्री :** हाँ, निश्चेतन चेतन है। घूमता-फिरता है, काम करता है, बोलता है, चलता है, चिढ़ता है, गुस्सा करता है, स्वाद पहचानता है, सब करता है लेकिन वह निश्चेतन चेतन है। उसमें चेतन बिल्कुल भी नहीं है। मिश्र चेतन में (बिलीफ) चेतन है। वह अन्य क्रियाएँ कर सकता है। यह निश्चेतन चेतन अन्य क्रियाएँ नहीं कर सकता। जो डिज़ाइन है, उस डिज़ाइन के अनुसार ही चलता है। उस डिज़ाइन से बाहर नहीं जा सकता और मिश्र चेतन अज्ञान दशा में डिज़ाइन से बाहर ले जाता है।

**प्रश्नकर्ता :** शुद्ध चेतन कैसे का वैसा ?

**दादाश्री :** हाँ, और आपको निश्चेतन चेतन से काम लेना है। उसे अपने आप देखते रहना है, बस? क्योंकि वह खुद ही निश्चेतन चेतन है। उसके लक्षण चेतन जैसे दिखाई देते हैं लेकिन उसमें नाममात्र को भी चेतन नहीं है, उसे मुर्दा कहा जाए तो भी चलेगा। आप में भी अब शुद्धात्मा के अलावा जो दूसरा भाग बचा है वह पूरा निश्चेतन चेतन है। मिश्र चेतन चला गया।

**प्रश्नकर्ता :** मिश्र चेतन चला गया, निश्चेतन चेतन रह गया।

**दादाश्री :** मिश्र चेतन तो क्रियाकारी है। करता है और भुगतता भी है। दोनों करता है।

**प्रश्नकर्ता :** वह जीवित अहंकार है?

**दादाश्री :** हाँ, वह पूरा गया। आपका मिश्र चेतन चला गया है। सिर्फ निश्चेतन चेतन ही बचा है। बीच की जो पार्टी थी वह पूरी ही चली गई। बीच की कड़ी अलग हो गई। दोनों को जोड़ने वाली जो बीच की कड़ी थी, वह खत्म हो चुकी है।

**प्रश्नकर्ता :** अब सिर्फ निश्चेतन चेतन (मुर्दा) और आत्मा ही बाकी बचे हैं।

**दादाश्री :** आप शुद्धात्मा और बाकी का सब मुर्दा। बस, इतना ही बाकी बचा।

**नासमझी से लेता है असर को अपने सिर**

**प्रश्नकर्ता :** यह पूरा डिस्चार्ज भाग मृत है लेकिन व्यवहार में आमने-सामने असर हो जाता है। दुःख की अनुभूति, सुख की अनुभूति।

**दादाश्री :** वे सब जो असर होते हैं वे मृत भाग को ही होते हैं। आप स्वीकार कर लेते हो कि 'यह मुझे हुआ।' इसीलिए हम कहते हैं न, अगर शंका हुई तो इसका मतलब स्वीकार कर

लिया, उसी वजह से जवाबदेही आ गई। वह कुछ करे और हमें शंका होने लगे तो हमें कर्म चिपकेंगे।

**प्रश्नकर्ता :** शंका होने से कर्म चिपकते हैं?

**दादाश्री :** हाँ, शंका होती है तो फिर तुरंत ही पुलिस वाला पकड़ता है। कहेगा, 'इस व्यक्ति ने कुछ गुनाह किया है।'

**प्रश्नकर्ता :** तो क्या वह चार्ज हो गया?

**दादाश्री :** चार्ज नहीं, लेकिन जवाबदेही आती है।

**प्रश्नकर्ता :** दादा, जवाबदेही आने में और चार्ज नहीं होने में क्या फर्क है।

**दादाश्री :** उसमें फर्क है। चार्ज में आधार सहित कर्ता बनता है और इसमें तो साधारण फल मिलेगा। असर वगैरह जो होता है, वे क्या चेतन को होते हैं?

**प्रश्नकर्ता :** नहीं, ठीक है। मेकेनिकल चेतन को असर होता है, चेतन को नहीं।

**दादाश्री :** इफेक्टिव ही है वह मुर्दा। इफेक्टिव यानी असर वाला ही है। सभी असर उसी के हैं और यदि आप सिर पर ले लो, तो आप से चिपकेंगे। और कुछ नहीं है। चार्ज किया हुआ तो अच्छा है लेकिन यह जो शंका की, वह गलत है। उससे अलग ही तरह की एक गाँठ पड़ जाती है।

**प्रश्नकर्ता :** वह क्या कहा, दादा?

**दादाश्री :** इससे तो पूरी ही उल्टी समझ की गाँठ पड़ जाती है। उससे उल्टी समझ पैदा होती है। असर होता है मुर्दे को और खुद स्वीकार कर लेता है उससे फिर उल्टा ही हो जाएगा न अंदर! ज्ञान-दर्शन पर आवरण आ जाएगा।



**मुर्दे पर असर को देखने से नहीं रहेगी**  
**दखल**

**प्रश्नकर्ता :** दादा, कभी-कभी ऐसा लगता है कि अब क्या बचा है? किसलिए जीना है? अब क्या बाकी बचा है?

**दादाश्री :** लेकिन आप जीवित ही हो न, परमानेंट जीवित ही हो, फिर भी अब ऐसा कह रहे हो कि 'क्या ज़रूरत है'?

**प्रश्नकर्ता :** ऐसा नहीं! अब ऐसे विचार आते हैं। सामान्य तौर पर उम्र होने पर ऐसा लगता है कि अभी और पाँच-दस साल जी लें। मुझे उल्टे ही विचार आते हैं कि किसलिए जीना है? क्यों यहाँ पर पड़े रहें।

**दादाश्री :** अरे! ऐसा करके तो वह लंपट हस्ताक्षर करवा लेता है! वह हस्ताक्षर किए बगैर नहीं ले जाता।

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन अगर करवा लेगा तो भी क्या है?

**दादाश्री :** यों उलझाकर हस्ताक्षर करवा लेता है अंदर। मुर्दा ऊब जाए तो क्या अपने सिर पर ले लें? मुर्दे का क्या होता है, वह देखते रहना है।

यानी यह मुर्दा क्या कर रहा है वह हमें देखते रहना है। अगर चिढ़ मचती है तो वह भी मुर्दे को, खुशी हो तो वह भी मुर्दे को, और अगर किसी को तमाचा लगा दे तो वह भी मुर्दे का। एक बार मुर्दा है ऐसा पहचान जाएँगे तो फिर वह दखल नहीं करेगा। वह तो कहेगा, 'मुझे ऐसा हो रहा है।' अरे, भाई, जो भी हो रहा है वह मुर्दे को हो रहा है। तू तो उसका जानकार है। तू अलग और यह मुर्दा अलग।

और यदि उसे देखा करोगे तो कुछ भी उल्टा नहीं होगा। आप क्या करते हो? देखते रहते हो?

**प्रश्नकर्ता :** हाँ, देखते ही रहना है।

**दादाश्री :** महावीर भगवान एक पुद्गल को ही देखा करते थे, पुद्गल यानी मुर्दे को।

**प्रश्नकर्ता :** हाँ, वह सब एक ही है।

**दादाश्री :** मुर्दे को ही देखते रहते थे। ये सभी मुर्दे ही हैं, उन्हीं को देखते रहते थे। कोई गाली दे, वह भी मुर्दा है और सुनने वाला भी मुर्दा है। जो चिढ़ता है, वह भी मुर्दा है और जो नहीं चिढ़ता वह भी मुर्दा है। भगवान खुद के ही एक पुद्गल को देखते रहते थे। सभी के पुद्गल को एक स्वभावी ही देखते थे।

**जो देह को फाइल मानता है, वह जीते जी मृत है**

अभी तक तो कहते थे कि 'मुझे हो गया', लेकिन अब ज्ञान के बाद, 'मुझे हो गया' का साथ मत देना! अरे, आपको कैसे हो सकता है? आपको तो दादा ने अलग कर दिया है! अलग नहीं किया?

**प्रश्नकर्ता :** अलग ही हैं।

**दादाश्री :** हाँ, तब तो अलग ही रखना चाहिए न! 'मुझे हुआ' कहकर पूरा जगत् साइलॉजिकल रोग से पीड़ित है। कहता है, 'मेरा ही समधी मुझे गाली दे गया।'

**प्रश्नकर्ता :** आप सत्संग में कुछ-कुछ देर में जुदा रखने के प्रयोग के बारे में कहते ही रहते हैं।

**दादाश्री :** मुख्य चीज़ यही है न!

**प्रश्नकर्ता :** यदि मन कुछ भी बताए तो मन से कह देना कि 'तेरा नहीं चलेगा'। मन से बात करते ही अलग हो जाएगा।

**दादाश्री :** हाँ, अलग ही हो जाएगा और इस देह को 'फाइल नंबर वन' कहा तो भी अलग हो जाएगा।

**प्रश्नकर्ता :** देह को फाइल मानेगा तो फिर जीते जी मर जाएगा न?

**दादाश्री :** हाँ, फाइल कहा तो जीते जी मर जाएगा।

### रहना है फाइल वन का ज्ञाता-दृष्टा

यह जो चंदूभाई का शरीर है, वह पूरा ज्ञेय है और आप ज्ञाता हैं। ज्ञाता-दृष्टा दोनों हैं और ज्ञायक यानी जानना और देखना, वह आपका खुद का स्वभाव ही है, अन्य कोई स्वभाव नहीं है। अतः यह चंदूभाई दृश्य और ज्ञेय हैं। इस चंदूभाई के सभी स्पेयर पार्ट्स भी दृश्य और ज्ञेय हैं। उसी प्रकार मन भी दृश्य और ज्ञेय है। उसे सिर्फ जानना ही है कि मन क्या सोच रहा है। उसमें फिर अंदर हाथ नहीं डालना है। हाथ डालोगे तो जल जाओगे।

ज्ञाता-दृष्टा का सर्वोपरी अर्थ यह है कि 'बस हर तरह से जाने और देखे। वह खुद अंदरूनी तौर पर क्या कर रहा है? मन-बुद्धि-चित्त-अहंकार सभी क्या कर रहे हैं?' अन्य कुछ नहीं। और आपको किस पद में आना है, कि चंदूभाई चलते-फिरते दिखाई दें। चंदूभाई घूमते रहे हों और फिर जब आप बैठकर(सामायिक में) देखा तो उस घड़ी चंदूभाई दिखाई देंगे कि किस तरह घूम रहे थे। यानी आपको चंदूभाई का पूरा शरीर दिखाई देना चाहिए। बाहरी हिस्सा दिखाई देना चाहिए, अंदरूनी हिस्सा दिखने में

देर लगेगी। जब बाहरी हिस्सा जुदा दिखाई दे, तब वीतराग होने लगता है। फिर संपूर्ण वीतराग हो सकता है।

अब यह बाहरी हिस्सा क्या है? कि बेटा जा रहा हो और उसकी जेब से पैसे गिरने लगें, तब पहले तो हम क्या करते थे? डाँट देते थे, शोर मचा देते थे, 'अरे! रुक जा, पैसे गिर रहे हैं, रुक जा।' अंदर पूरा हिल जाता था। क्योंकि (अहंकार) जीवित था। चंदूभाई के तौर पर जीवित था, इसलिए ऐसा होता था न! ज्ञाता-दृष्टा बनने के बाद यदि पैसे गिरें या जो कुछ भी होना हो, तब आप उसे चेतावनी दे सकते हैं कि, 'भाई, तेरी जेब से पैसे गिर रहे हैं।' फिर उसमें हमें विचलित नहीं होना है। यदि चेतावनी नहीं दें तो भी हर्ज नहीं है। ऐसा पता नहीं चलना चाहिए कि हम जीवित हैं।

### ऐसे जीयो जैसे हो ही नहीं

अभी तो यह दृष्टि और भी ऊपर-ऊपर जाएगी। आज अगर जीवित होते तो अंदर चीखने-चिल्लाने लगते, अब तो जो भी भूल होने हो या नुकसान होना हो तो भले हो, आप ज्ञाता-दृष्टा रहना। मर चुके होते तो फिर क्या करते? यदि बाद में भूलें होती तो? यह सब ऐसा है, उस तरह का बेटे के हाथ से सभी ग्लासवेर टूट जाएँ तो हम देखने वाले और जानने वाले! बस! एक शब्द भी मत बोलना, जैसे जी ही नहीं रहे हैं, ऐसे रहना है।

**प्रश्नकर्ता :** दादा, आपने तो बहुत ही अल्प समय में कृपालुदेव की अंतिम दशा दे दी!

**दादाश्री :** हाँ, तो कल्याण हो जाएगा न! वह अच्छा है।

दादाई जगकल्याण मिशन - सत्संग हाइलाईट्स

**28-31 दिसम्बर :** अडालज त्रिमंदिर संकुल में आठ दिवसीय सत्संग पारायण हुआ। ज्ञाता-दृष्टा, ज्ञायक, सहजता, एक ही पुद्गल को देखना और देखनेवाला और जाननेवाला और उसका भी जाननेवाला इन प्रकरणों का वाँचन और उन पर सत्संग हुआ। पारायण दौरान आप्तवाणी 11(पू.), आप्तवाणी 13 (उ.) की ऑडियो बुक, स्वरमणा-5 (हिन्दी), दादाश्री की ज्ञानवाणी-30 MP3 एवं असामी, कन्नड और पंजाबी भाषा में बेसिक पुस्तकों का विमोचन किया गया। पारायण दौरान 2018 में मनाई जाने वाली 111वीं जन्मजयंती की तैयारी के लिए विशेष प्रदर्शन का आयोजन किया गया, जिसका उद्घाटन पूज्य श्री के हस्तों से हुआ। 7 हजार से भी अधिक महात्माओं ने इस पारायण का लाभ लिया। नाताल (क्रिसमस) के दिन विदेशी महात्माओं ने पद गान किया। 31 दिसम्बर की नव वर्ष की पूर्व संध्या पर जायजेन्टिक हॉल में भक्ति के बाद पूज्य श्री ने महात्माओं को नव वर्ष की शुभकामनाएँ दी।

**1 जनवरी :** हर वर्ष की तरह इस वर्ष श्री सीमंधर स्वामी प्रभु की प्रतिमाओं की प्राणप्रतिष्ठा विधि हुई। पूज्य श्री द्वारा अलग-अलग साइज की लगभग 1200 मूर्तियों की प्राणप्रतिष्ठा की गई। प्रतिष्ठा के दौरान महात्माओं ने सामूहिक प्रार्थना, विधियाँ और भक्ति की। तत्पश्चात् महात्माओं ने मूर्तियों का प्रक्षाल, पूजन और आरती की। अंत में पूज्य श्री की उपस्थिति में, जिन महात्माओं की मूर्ति की प्रतिष्ठा हुई, वे मूर्ति को सर पर रखकर गरबा में उल्लासपूर्वक नाचे।

**2 जनवरी :** परम पूज्य दादा श्री की 29वीं पूण्यतिथि अडालज त्रिमंदिर संकुल में विशेष तौर पर मनाई गई। सुबह प्रत्यक्ष दादा की वीडियो देखने के बाद महात्माओं ने भावोल्लास से दो घंटों के लिए किरतन भक्ति और पद भक्ति की। शाम को दादानगर हॉल में परम पूज्य दादा श्री के जीवन प्रसंग एवं आत्मज्ञान से संबंधित बातों को स्थानीय महात्माओं द्वारा नाटक के रूप में पेश किया गया।

**6-9 जनवरी :** बहुत सालों के बाद मुंबई कांदीवली विस्तार में पूज्य श्री के सत्संग-ज्ञानविधि कार्यक्रम का आयोजन हुआ। इस बार पूज्य श्री द्वारा 'लक्ष्मी हो तब' और 'चित्त शुद्धि से मोक्ष' टॉपिक पर सत्संग हुए। इस एरिया में ज्यादा गुजराती होने के कारण कार्यक्रम में बहुत से नए मुमुक्षु आए थे। ज्ञानविधि दौरान 1700 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। 500 से ज्यादा स्थानीय एवं सेवार्थी महात्माओं को पूज्य श्री के साथ मॉर्निंग वॉक एवं सेवार्थी सत्संग और दर्शन का लाभ प्राप्त हुआ। लगभग साढ़े पाँच हजार महात्मा ज्ञानविधि में हाजिर थे। विशेष तौर पर इस बार GNC के बच्चों ने देवी-देवता, साधु-साध्वी और ज्ञानी भगवंतों की वेशभूषा में पूज्य श्री का स्वागत किया। आप्तपुत्र-पुत्रियों द्वारा MMHT, WMHT और फोलोअप सत्संग किए गए, उनमें भी महात्मा विशेष रूप से हाजिर रहे। ज्ञान लिए हुए लगभग 700 महात्माओं ने सत्संग में आकर ज्ञान की और ज्यादा समझ प्राप्त की।

**9-11 जनवरी :** पूज्य नीरू माँ की जन्मभूमि ऐसे औरंगाबाद शहर में सत्संग-ज्ञानविधि कार्यक्रम का आयोजन हुआ। पहले और तीसरे दिन, ज्ञानविधि से पहले और बाद में, आप्तपुत्र सत्संग आयोजित हुआ था। जिस शहर में पूज्य दादा भगवान, पूज्य नीरू माँ और पूज्य श्री जा चुके हैं और पूज्य नीरू माँ के फैमिली की ओर से इतने ज्यादा प्रयत्नों के बावजूद भी लोगों ने ज्ञान प्राप्ति नहीं की थी वहाँ अब इतने सारे लोग ज्ञान प्राप्त कर रहे हैं, इस बात से ज्यादा आनंद आ रहा है। औरंगाबाद और आसपास के गाँव और शहरों से 600 मुमुक्षुओं ने 10 जनवरी को आत्मज्ञान प्राप्त किया। लगभग 80 महात्माओं ने सेवार्थी सत्संग और दर्शन का लाभ पाया।

**12-14 जनवरी :** महाराष्ट्र के जलगाँव शहर में पहली बार पूज्य श्री के सत्संग-ज्ञानविधि कार्यक्रम आयोजित हुए। यजमान और स्थानीय महात्माओं ने पूज्य श्री का स्वागत पुष्प-दीया और आरती से परंपरागत तरीके से किया। पूज्य श्री द्वारा 'मनुष्य जीवन का ध्येय' टॉपिक पर सत्संग हुआ और मुमुक्षुओं ने अपने प्रश्नों के समाधानकारी जवाब पाये। ज्ञानविधि में 570 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान की प्राप्ति की। सेवार्थी सत्संग में जलगाँव और अमरावती के सेवार्थी मिलकर 150 सेवार्थियों को पूज्य श्री के सत्संग और दर्शन का लाभ प्राप्त हुआ। आप्तपुत्र द्वारा फोलोअप सत्संग में भी 250 से ज्यादा महात्माओं ने पाँच आज्ञा से संबंधित और ज्यादा समझ प्राप्त की।

## दादावाणी

आत्मज्ञानी पूज्य नीरू माँ और पूज्य दीपकभाई के आशीर्वाद प्राप्त आप्तपुत्रों के सत्संग कार्यक्रम

### उत्तर प्रदेश

वाराणसी	दि : 1-2 अप्रैल	संपर्क : 9795228541
गोरखपुर	दि : 3-4 अप्रैल	संपर्क : 7309061683
कानपुर	दि : 8-9 अप्रैल	संपर्क : 9452525981
लखनऊ	दि : 10 अप्रैल	संपर्क : 8090177881
बैरली	दि : 11 अप्रैल	संपर्क : 9837149162

### उत्तराखंड

लकसर	दि : 12 अप्रैल	संपर्क : 9719415074
रूरकी	दि : 13 अप्रैल	संपर्क : 9719415074
देहरादून	दि : 14 अप्रैल	संपर्क : 9719415074

### बिहार

कटिहार	दि : 4 अप्रैल	संपर्क : 9430928282
पूर्णिया	दि : 6 अप्रैल	संपर्क : 9631036049
पटना	दि : 8-9 अप्रैल	संपर्क : 7352723132

### झारखंड

हजारीबाग	दि : 11 अप्रैल	संपर्क : 8863917555
मुरी	दि : 12 अप्रैल	संपर्क : 9835174467
टाटानगर	दि : 27 अप्रैल	संपर्क : 9931538777

### उड़ीसा

कटक	दि : 15-16 अप्रैल	संपर्क : 7809266474
बरहामपुर	दि : 17-18 अप्रैल	संपर्क : 9853333355
बरगढ	दि : 19 अप्रैल	संपर्क : 8658090042
संबलपुर	दि : 20 अप्रैल	संपर्क : 9668159987
रौरकेला	दि : 21 अप्रैल	संपर्क : 7749975047
भुवनेश्वर	दि : 22-23 अप्रैल	संपर्क : 8763073111
पुरी	दि : 24 अप्रैल	संपर्क : 7077902158
बालासोर	दि : 25 अप्रैल	संपर्क : 9658559559
जालेश्वर	दि : 26 अप्रैल	संपर्क : 9658559559

### आसाम

गुवाहाटी	दि : 2 अप्रैल	संपर्क : 8486363944
नलबारी	दि : 3 अप्रैल	संपर्क : 8011651779

### छत्तीसगढ

रायपुर	दि : 28-30 अप्रैल	संपर्क : 8889944333
--------	-------------------	---------------------

### पश्चिम बंगाल

कोलकाता	दि : 23 अप्रैल	संपर्क : 9830093230
---------	----------------	---------------------

### नेपाल

नेपाल ( बुटवल )	दि : 5-6 अप्रैल	संपर्क : 9847042399
-----------------	-----------------	---------------------

समय और स्थल की जानकारी के लिए उपर दिए गए नंबर पर संपर्क करें।

पूज्य नीरूमाँ को देखिए टी.वी. चैनल पर...

- भारत**
- + 'डीडी'-इन्डिया पर हर रोज़ शाम 6 से 6-30 (हिन्दी में)
  - + 'दूरदर्शन'-बिहार पर हर रोज़ सुबह 7-30 से 8 तथा शाम 6-30 से 7 (हिन्दीमें)
  - + 'दूरदर्शन'-गिरनार हर रोज़ पर सुबह 9 से 9-30 (गुजराती में)
  - + 'अरिहंत' पर हर रोज़ शाम 5 से 5-30 (गुजराती में)
- USA**
- + 'TV Asia' पर हर रोज़, सुबह 7-30 से 8 EST (गुजराती में)
  - + 'कलर्स' टीवी पर हर रोज़ सुबह 8 से 8-30 EST (हिन्दी में)
- UK**
- + 'वीनस' टीवी पर हर रोज़ सुबह 8 से 8-30 (हिन्दी में)
  - + 'कलर्स' टीवी पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 (हिन्दी में)

पूज्य दीपकभाई को देखिए टी.वी. चैनल पर...

- भारत**
- + 'दूरदर्शन' नेशनल पर सोम से शुक्र सुबह 8-30 से 9, शनि सुबह 9 से 9-30, रवि सुबह 6-30 से 7
  - + 'दूरदर्शन' मध्यप्रदेश पर सोम से शनि दोपहर 3-30 से 4, रवि शाम 6 से 6-30 (हिन्दीमें)
  - + 'दूरदर्शन' उत्तरप्रदेश पर हर रोज़ रात 9-30 से 10 (हिन्दीमें)
  - + 'दूरदर्शन' गुजरात - गिरनार पर हर रोज़ दोपहर 3-30 से 4 (गुजराती में)
  - + 'दूरदर्शन' गिरनार पर हर रोज़ रात 10 से 10-30 (गुजरातीमें)
  - + 'अरिहंत' चैनल पर हर रोज़ रात 8 से 9 (गुजराती में)
  - + 'दूरदर्शन'-सह्याद्रि पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 (मराठीमें)
- USA**
- + 'कलर्स' टीवी पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 EST (हिन्दी में)
- UK**
- + 'वीनस' टीवी पर हर रोज़ सुबह 8-30 से 9 (गुजराती में)
  - + 'रिश्ते' चैनल पर हर रोज़ सुबह 7-30 से 8 (हिन्दी में) - नया कार्यक्रम
- Singapore**
- + 'कलर्स' टीवी पर हर रोज़ सुबह 4-30 से 5 तथा सुबह 7 से 7-30 (हिन्दी में)
- Australia**
- + 'कलर्स' टीवी पर हर रोज़ सुबह 7-30 से 8 तथा सुबह 10 से 10-30 (हिन्दी में)
- New Zealand**
- + 'कलर्स' टीवी पर हर रोज़ सुबह 9-30 से 10 तथा रात 12 से 12-30 (हिन्दी में)
- USA-UK-Africa-Aus.** + 'आस्था' (डीश टीवी चैनल 849-युके, 719-युएसए) पर हर रोज़ रात 10 से 10-30

'दादावाणी' के सभी सदस्यों के लिए सूचना

हिन्दी और अंग्रेजी भाषाओं में दादावाणी पत्रिका हर महिने 15वी तारीख को पोस्ट की जाती है। जिन महात्माओं को 'दादावाणी' पत्रिका विलंब से या तो अनियमित रूप से मिलती है, वे पूर्व प्राप्त पत्रिका के कवर पर अपना नाम, पता, पीनकोड आदि जाँच कर लें। यदि उसमें कोई भूल हो तो आपका ग्राहक नं., पूरा नाम-पता, पीनकोड के साथ लिखकर मोबाईल नं. 8155007500 पर SMS करें। आप अडालज त्रिमंदिर के पते पर पत्र से या [dadavani@dadabhagwan.org](mailto:dadavani@dadabhagwan.org) इ-मेइल आइडी पर इ-मेइल से भी सूचित कर सकते हैं। जिससे आपकी यहाँ दर्ज की गई जानकारी में सुधार किया जा सके। यदि आपको दादावाणी का अंक न मिले तो उपर दिए गए कोई भी माध्यम से हमें सूचित करें। यदि अंक स्टोक में होगा तो आपको फिर से भेजा जाएगा।

**आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सांनिध्य में अडालज त्रिमंदिर में आगामी सत्संग कार्यक्रम**

17 मार्च (शुक्र), शाम 4 से 7 - सत्संग

18 मार्च (शनि), शाम 4 से 7-30 - ज्ञानविधि

18 मार्च (शनि), सुबह 10 से 12 - मुमुक्षुओं के लिए आप्तपुत्र सत्संग

19 मार्च (रवि), शाम 4-30 से 10- पू. नीरू माँ की 11वी पुण्यतिथि पर विशेष कार्यक्रम

**PMHT ( पैरेन्ट्स महात्मा ) शिविर**

5-9 मई (शुक्र - मंगल) - सत्संग समय की घोषणा बाकी

सूचना : 1) यह शिविर ज्ञान लिए हुए विवाहित महात्माओं के लिए ही रखी गई है।

2) इस शिविर में 'मा-बाप बच्चों का व्यवहार', 'पति-पत्नी का दिव्य व्यवहार' तथा 'पैसों का व्यवहार' टोपिक पर पूज्यश्री दीपकभाई द्वारा सत्संग होगा तथा आप्तपुत्र भाईयों तथा आप्तपुत्री बहनों द्वारा ग्रुप सत्संग किए जाएँगे। हिन्दी भाषी महात्माओं के लिए रेडियो सेट के द्वारा हिन्दी में भाषांतर की सुविधा उपलब्ध होगी। भाग लेनेवाले महात्मा अपने साथ खुद का एफएम रेडियो और हेडफोन लेकर आए। (अगर आपके मोबाइल में एफएम सुविधा है, तो सत्संग स्थल पर आपके मोबाइल पर ही सत्संग का हिन्दी भाषांतर सुन सकेंगे।)

3) शिविर में भाग लेने के लिए अपने नज्दिकी सेन्टर में और अगर नज्दिक में कोई सेन्टर नहीं है, तो अडालज त्रिमंदिर के फोन नं. (079) 39830400 (सुबह ९-३० से १२ तथा दोपहर ३ से ६) पर अपना रजिस्ट्रेशन करवाएँ।

**हिन्दी सत्संग शिविर - वर्ष 2017**

25-29 मई (गुरु-सोम) - सत्संग समय की घोषणा बाकी

27 मई (शनि) - ज्ञानविधि तथा 29 मई (सोम) - पूज्यश्री के संग एक दिवसीय यात्रा

सूचना : 1) यह शिविर गुजराती भाषा नहीं जानने वाले मुमुक्षु-महात्माओं के लिए साल में एक बार हिन्दी में विशेष रूप से आयोजित की जाती है

2) भाग लेनेवाले महात्माओं को अपने नज्दिकी सत्संग केन्द्र पर अपना रजिस्ट्रेशन करवाना आवश्यक हैं।

यदि आप 29 मई को आयोजित यात्रा में शामिल होनेवाले हों, तो आपका वापसी टिकट 30 मई का लें। रेल्वे टिकट रिज़र्वेशन चार महिने पहले एडवान्स में होता है, इसलिए यह जानकारी आपको टिकट बुक करने हेतु दी जा रही है।

**'दादावाणी' के वार्षिक सदस्यों के लिए सूचना**

आपको आपकी दादावाणी पत्रिका की सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपको मिली इस महीने की दादावाणी पत्रिका के कवर पर लगे हुए लेबल पर ग्राहक नं. के बाद # हो तो यह आपकी अन्तिम दादावाणी पत्रिका है। उदा. DHIA12345#. दादावाणी पत्रिका रिन्यु कराने के लिए पेज नं. 3 पर दर्शाये गए मूल्य अनुसार मनी आर्डर या डिमान्ड ड्राफ्ट (पेयेबल अहमदाबाद) त्रिमंदिर अडालज के पते पर भेजें। साथ ही अपना नाम, पूरा पता (पिनकोड के साथ), फोन-मोबाइल नंबर, इ-मेल आदि आवश्यक जानकारी दें।

त्रिमंदिरों के संपर्क: अडालज: (079) 39830100, राजकोट: 9924343478, भूज: 9924345588, गोधरा: 9723707738,

मोरबी: (02822)297097, सुरेन्द्रनगर: 9737048322, अमरेली: 9924344460,

अन्य सेन्टरों के संपर्क: अहमदाबाद: (079) 27540408, मुंबई: 9323528901, वडोदरा (दादा मंदिर): 9924343335,

दिल्ली: 9810098564, बैंगलूर: 9590979099, कोलकता: 9830093230

यु.एस.ए.-केनेडा: +1 877-505-DADA (3232), यु.के.: +44 330-111-DADA (3232), ऑस्ट्रेलिया: +61 421127947

# वडोदरा में...परम पूज्य दादा भगवान प्रेरित निष्पक्षपाती त्रिमंदिर का भव्य प्राणप्रतिष्ठा महोत्सव

दिनांक 22 से 26 फरवरी, 2017

आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सांनिध्य में...

- सत्संग** : 22 फरवरी, शाम 4 से 4-30 - स्वागत समारोह, 22-24 फरवरी- शाम 4-30 से 7, 23 फरवरी, सुबह 10 से 12-30
- ज्ञानविधि** : 25 फरवरी, शाम 4 से 7-30
- प्राणप्रतिष्ठा** : 24 फरवरी, सुबह 10 से 12 - शिव मंदिर में स्थापित सभी भगवंत  
25 फरवरी, सुबह 10 से 12 - कृष्ण मंदिर में स्थापित सभी भगवंत  
26 फरवरी, सुबह 9-30 से 1 - श्री सीमंधर स्वामी, श्री कृष्ण भगवान, श्री शिव भगवान
- 24-25 फरवरी, सुबह प्रतिष्ठा बाद प्रक्षाल-पूजन होगा, 26 फरवरी को प्रक्षाल-पूजन शाम 4 से 7 रहेगा।  
रात 9 से 10 - भक्ति/गरबा/कीर्तन भक्ति
- स्थल** : त्रिमंदिर, बाबरिया कोलेज के पास, वडोदरा-सुरत हाइ-वे, NH-8, वरणामा गाँव, वडोदरा ( गुजरात ).
- संपर्क** : 9924343335, 9825503819

## बाहर से आनेवाले महात्मा-मुमुक्षुओं की व्यवस्था हेतु खास सूचनाएँ

- 1) इस कार्यक्रम में भाग लेने हेतु रजिस्ट्रेशन करवाना आवश्यक है। 2) हिन्दी भाषी महात्माओं के लिए रेडियो सेट के द्वारा हिन्दी में भाषांतर की सुविधा उपलब्ध होगी। आनेवाले महात्मा अपने साथ खुद का एफएम रेडियो और हेडफोन लेकर आए। 3) ओढ़ने-बीछाने का चदर, एयर पीलो, बेटरी, जरूरी दवाईयाँ साथ में लाएँ। 4) जिनके पास दादा भगवान परिवार का परमनन्त आइ-कार्ड (पहचानपत्र) है, वे आई-कार्ड अवश्य साथ लेकर आएँ।
- 5) 26 फरवरी को महात्माओं के लिए ठहरने की व्यवस्था की गई है, इस लिए रात्रि को आयोजित विशेष भक्ति कार्यक्रम का लाभ लें।

## Pujya Deepakbhai's UK - Germany Satsang Schedule (2017)

Contact no. for all centers in UK + 44-330-111-DADA (3232), email:info@uk.dadabhagwan.org

Date	From	to	Event	Venue
31-Mar-17	7-30PM	10PM	Satsang	Shree Prajapati Association, Ulverscroft Road, Leicester, LE4 6BY
1-Apr-17	7-30PM	10PM	Satsang	
2-Apr-17	10-30AM	12-30PM	Aptaputra Satsang	
2-Apr-17	3PM	7-30PM	Gnanvidhi	
21-Apr-17	7-30PM	10PM	Satsang	Harrow Leisure Centre, Byron Hall, Christchurch Avenue, Harrow, HA3 5BD
22-Apr-17	10-30AM	12-30PM	Aptaputra Satsang in English	
22-Apr-17	7-30PM	10PM	Satsang	
23-Apr-17	10-30AM	12-30PM	Aptaputra Satsang	
23-Apr-17	3PM	7-30PM	Gnanvidhi	
24-Apr-17	7-30PM	10PM	Satsang	Sauerland Stern Hotel Willingen, Germany Email - info@dadabhagwan.de
26-Apr-17	5PM	7-30PM	Parayan (Science Of Karma)	
27-Apr-17	10AM	12-30PM	Parayan (Science Of Karma)	
27-Apr-17	5PM	7-30PM	Parayan (Science Of Karma)	
28-Apr-17	10AM	12-30PM	Satsang	
28-Apr-17	4-30PM	7PM	Gnanvidhi	
29-Apr-17	10AM	12-30PM	Satsang	
29-Apr-17	4-30PM	7PM	Satsang	
30-Apr-17	10AM	12-30PM	Darshan	



## व्यवहार करनेवाला दिखता है जीवित लेकिन है मृत ही

यह जो संसार व्यवहार है न, वह पूरा व्यवहार मृत ( डिस्वार्ज ) की तरह ही चल रहा है और कहता है कि, 'मैंने किया', यही भ्रांति है। अरे भाई, तू तो मरा हुआ है, तू क्या कर सकता है? जो लोग कुछ भी करते हैं न, वे सभी मृत हैं और वे अपने आप ऐसा मानते हैं कि 'मैं जीवित हूँ' बस इतना ही और फिर सिर्फ इतना ही नहीं कहते कि 'जीवित हूँ' बल्कि कहते हैं 'मैं तो इनका समधी हूँ।' ओहोहो! आये बड़े समधी! संडास जाने की तो शक्ति नहीं है। अगर कोई गालियाँ दें तो ऐसा कहते हैं कि 'इसने मुझे गाली दी।' तो भाई, जब छत पर से पथर गिरे और तुझे खून निकल आए तब गुस्सा नहीं करता और यहाँ पर कह रहा है कि 'इसने मारा।' जो मारता है वह भी चेतन नहीं है, वह तो निश्चेतन-चेतन है। वह मिकेनिकल चेतन है, उसे मृत ही कहेंगे न!

- दादाश्री

